मासिक

कुमावत इंडिया

कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com

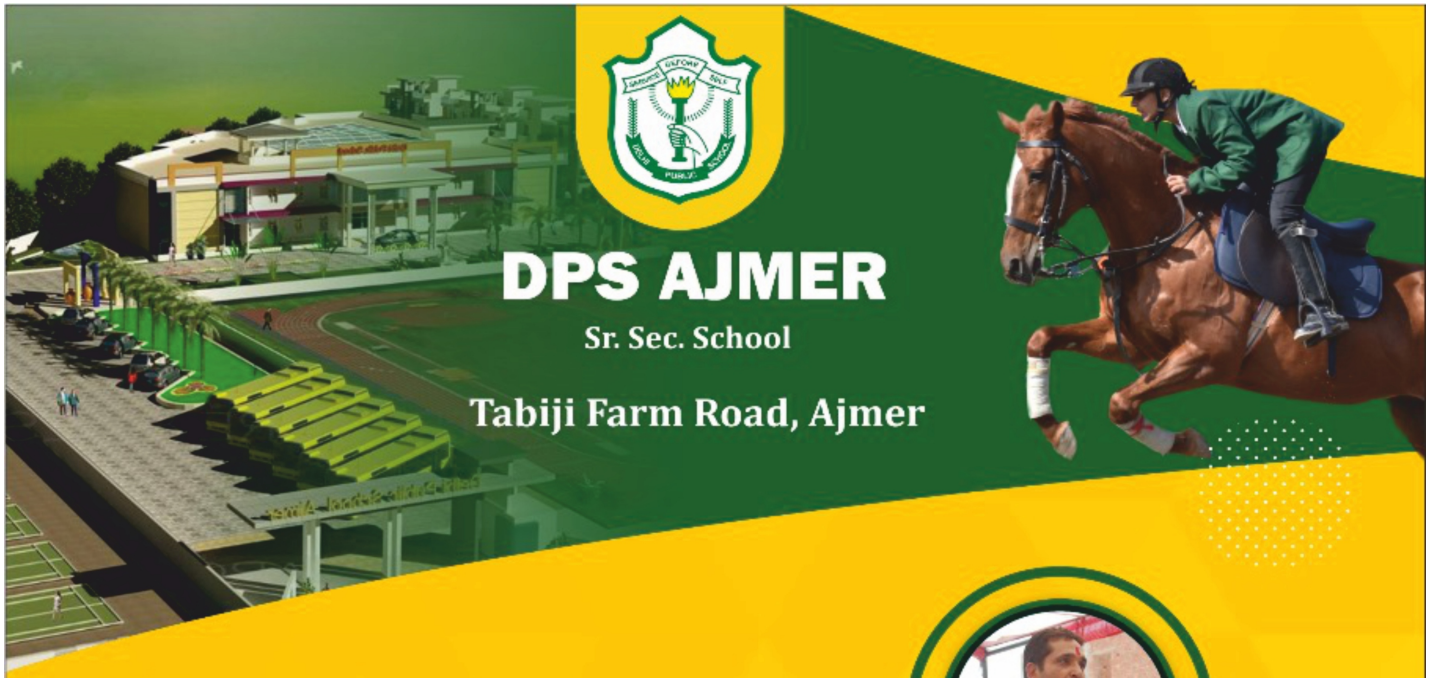
Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-10 | अंक-03 अक्टूबर 2026 पृष्ठ-32 मूल्य : ₹ 20.00









DPS AJMER

Sr. Sec. School

Tabiji Farm Road, Ajmer

ESTABLISHING
The Right Environment

We believe in building a modern culture using both traditional & next-generation tools. So, your child's natural talents can blossom.



SHASHI PAL KUMAWAT
Chairman

Our Activities

Archery & International
Level Shooting Range



Swimming Pool
"DPS Wave Pulse"



Horse Riding Club
Won Laurels at the National Level



Skating Rink





Karate Club
We have won Karate Championship at District, State & National Level.



Art & Craft



Tabiji Farm Road, Near D.D. Puram, Beawar Road, Ajmer

Web: www.dpsajmer.in E-Mail: info@dpsajmer.in

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

संरक्षक	:	जयकिशन सोकिल	**मो. 9829125428**
अध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	**मो. 9887440666**
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	**मो. 9414074376**
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	**मो. 9414810584**
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	**मो. 9549656438**
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	**मो. 9829056063**
		रमेश कुमावत (गेदर)	**मो. 9414554322**
		चेतन बालोदिया	**मो. 9414052736**
मुख्य सलाहकार	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	**मो. 9414994006**
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	**मो. 9414263429**

सम्पादक मण्डल : रमेश चन्द कुमावत (गैदर) सम्पादक - 9414554322, **सह-सम्पादक :** रमेश तोंदवाल 9460870125 एवं प्रिया मारवाल 9408093778, लक्ष्मीनारायण सिरस्वा 9829791846, उर्वशी बालोदिया 9351680888, **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया, मुकेश कारगवाल 9828606056 व राजसिंह बधानिया 9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629 **विधि सलाहकार :** विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397 दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580 सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444 वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299 मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188 जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301 उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687 ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493,** रवि बेडवाल **मो. 8290303003 बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957 सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812 इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645 किशनगढ़ :** प्रभुदयाल तुनगरिया **9680931428**

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, 22 गोदाम, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित, सम्पादक रमेश चंद कुमावत।

सम्पादकीय



कार्तिक अमावस्या को मनाई जाने वाली दीपावली पर अंधकार का नाश दीप की ज्योति करती है। ज्योति उजास का प्रतीक है, यह निराशा को आशा में और नकारात्मकता को सकारातमकता में परिवर्तित करती है, जो हमें हिम्मत से आगे बढ़ने का संदेश देती है। इसीलिए **''तमसो माँ ज्योतिगर्मय''** वाक्य लोकप्रिय हुआ। दीपावली आनंद और मंगल का परिचायक है और यह त्योहार जन-जन के तन-मन में उत्साह और उमंग भरकर आलौकिक कर देता है। प्रकाश और ज्योति को परमात्मा का स्वरूप माना गया है। इस रूप में आराधना से जीवन में लौकिक व आध्यात्मक सुख, शांति और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

अधर्म पर धर्म की विजय स्थापित कर भगवान राम इस दिन अयोध्या लौटे थे और अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था। इस परम्परा को हम सनानतियों ने आजतक जीवंत रखा है। चाहे दीपक का आकार-प्रकार बदल गया हो पर इसमें रखी बाती का धर्म प्रकाश देना ज्यों का त्यो है। समुद्रमंथन से प्रकट हुई धन की देवी लक्ष्मी की पूजा का विधान वैदिक काल से आजतक माना जा रहा है। माता लक्ष्मी और भगवान गणेश का पूजन हमारे सभी विघ्नों को दूरकर जीवन में सुख-शांति और वैभव लाने में सार्थक होता है। हमारे अपने आजीविका के लिए चाहे दूर शहर या अन्य प्रदेश में रहे पर वे दीपावली पर आकर परिवार के साथ दीपावली मनाना चाहते हैं। परिवारजन के आपस में मिलने से जीवन में नवीन ऊर्जा एवं उमंग का संचार होता है। दीपावली का सौन्दर्य तब ही खिलता है जब इस पर्व पर हमारे अपने साथ हो।

वास्तव में दीपावली पर्व जीवन के अंधकार, हताशा, निराशा आदि को दूरकर जीवन में प्रकाश, ऊर्जा, उमंग तथा उत्साह का संचार करने का महापर्व है। हम सभी के जीवन में श्रद्धा, सद्भाव, संवेदना, सद्विश्वास तथा सद्ज्ञान के दीप की ज्योति जले तब ही दीपावली की सार्थकता है, यह प्रयास हमें करते रहना है। सदियों तक ज्योति पर्व मनाने की परम्परा हमें भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से आपस में जोड़े रखने का सशक्त माध्यम रही है, यह निरन्तर बनी रहे।

अब दुनिया ग्लोबल विलेज में परिवर्तित हो चुकी है। अनेक देशों में दीपावली पर्व का आकर्षण फैल चुका है। अमेरिका, आस्ट्रेलिया, यूरोप आदि में इस दिन रोशनी और आतिशबाजी देखी जा सकती है। यह हमारी सनातन संस्कृति का विस्तार है जो **'वसुदेव कुटुम्बकम'** की अवधारणा को चरितार्थ कर रहा है।

इस पर्व को खुशी एवं उमंग से मनाये तथा पटाखे भी चलायें। पर ध्यान रखे कि जहां तक हो सके वायु प्रदूषण एवं ध्वनी प्रदूषण नहीं हो। ग्रीन दिपावली मनाएं और सभी आनंद लें।

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामना।

- रमेश कुमावत (गैदर)

हमारी वेवबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय	3
कुमावत गौरव : श्रीमती भारती वर्मा (कुमावत) Double M.A.,B.Ed.	5
समाज प्रतिभा : श्री धर्मेश कुमावत	5
दिल्ली विधानसभा में गूंजी श्रेया कुमावत की आवाज	5
बेसबॉल में हिमांशी ने जीता कांस्य पदक, बढ़ाया मान	6
प्रतियोगिता में राजस्थान में पूनम का पहला स्थान	6
अर्नव कुमावत ने जिला स्तर पर जीता स्वर्ण पदक	6
भंदे बालाजी पहुंची पदयात्रा, ध्वज चढ़ाया	6
दांता नगरपालिका के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा पार्षदों का किया अभिनंदन	7
कुमावत समाज बॉक्स क्रिकेट सीजन-1 का आयोजन	7
70वीं राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 2026-27 में रोशन कुमावत का चयन	7
राष्ट्रीय अध्यक्ष के जन्मदिन पर रक्तदान शिविर एवं सम्मान समारोह का आयोजन	8
कुमावत वरिष्ठ नागरिक ट्रस्ट की चितौडगढ़ धार्मिक यात्रा सम्पन्न	8
फ्लाई दुबई फ्लाइट के भारतीय पायलेट स्मित मच्छार ने दिखाया अदम्य साहस	9
43 जोड़ो का सफल सामुहिक कार्यक्रम	9
कुमावत समाज ने कर्नाटक के राज्यपाल को सौंपा ज्ञापन	9
दीपावली: चेतना का महापर्व और आत्मिक आलोक का उत्सव	10
जानकी जानती थी	11
रूप चतुर्दशी: सौंदर्य और पवित्रता का महापर्व	12
करवा चौथ दाम्पत्य प्रेम को बढ़ाने वाला व्रत	12
दीपावली के दिन कैसे करें घर की सजावट	13
कैसे मनाएं सुरक्षित दीपावली	13
दीपावली का अर्थ हर व्यक्ति के लिए अलग	14
लक्ष्मी पूजन कैसे करें ?	15
पार्षद सीपी कुमावत बने 'पब्लिक के स्टार'	15
म्यूजिक मेस्ट्रो से दिया लता को ट्रिब्यूट, 20 कलाकारों ने 3 घंटे में गाए 25 गाने	15
श्री कृष्ण की गोवर्धन लीला	16
दीपोत्सव और ज्योतिष का संगम	17
श्री बाबूलाल ब्याड़वाल के दो पौत्रों ने किया B.Tech.	18
उर्मिला कुमावत जिला संयोजक नियुक्त	18
गोवर्धन पूजा: प्रकृति, विश्वास और मनुष्य के अहंकार की कथा....	21
आंवला एक गुण अनेक	22
आई दिवाली	22
भैया दूज: भाई-बहन के अटूट प्रेम और स्नेह का पावन पर्व	23
चार युगों में मानव का चरित्र	23
विशिष्ठ संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि	24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	25
पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क करें	26
मिनी दाल पकवान	27



श्रीमती संगीता कुमावत पुत्री बनवारी लाल सिरस्वा का RAS परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद राजस्थान पुलिस सेवा में चयन हुआ है। 'कुमावत इंडिया पत्रिका की ओर से श्रीमती संगीता कुमावत को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं !



डॉ. गीता कुमावत मंगलाव पत्नी श्री अजय कुमार भाटीवाल, रावला (पुत्री श्री बाबूलाल मंगलाव, सागर, रिडमलसर, बीकानेर) का पशु चिकित्सा अधिकारी (Veterinary Officer) के पद पर चयन होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।



भावना कुमावत सुपुत्री श्रीमती मूलीदेवी एवं श्री आसुराम जी (भाटिया) हेमानाडा निम्बला का MBBS में फाइनल चयन होकर मेडिकल साइंस रायचूर कॉलेज मिलने पर बहुत – बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।



श्रीमती भारती वर्मा (कुमावत) Double M.A.,B.Ed.



भारती वर्मा का जन्म 13 जुलाई 1965 को कोटा में स्व. श्रीमती सावित्री देवी- स्व. श्री युगल किशोर कुदाल (बीड़ी व्यवसायी) के आंगन में हुआ। इन्होंने वर्ष 1989 में अपनी शिक्षा पूर्ण की तथा वर्ष 1996 में शिक्षा विभाग, राजस्थान में अध्यापिका बनी। जहां नवम्बर 2023 तक अपनी सेवाएं दी एवं राजनीति में रुचि होने से एच्छिक सेवानिवृत्ति ली।

इनका विवाह 15 फरवरी 1989 को श्री रमेश वर्मा (B.Sc., D. Pharma) पुत्र श्री भंवानी शंकर तोंदवाल (आर्किटेक्ट) के साथ हुआ। इनके दो पुत्र हैं (1) आभाश (M. Arch) जो Ey में हैं तथा बहु कृति (M. Arch) निजी कम्पनी में सेवा दे रही हैं। (2) अभिनन्दन (B. Arch) प्राईवेट कम्पनी में तथा बहु रेणुका M.Sc. है जो केन्द्रीय सचिवालय, दिल्ली में सेक्शन ऑफिसर है।

इन्हें एंकरिंग एवं मंच संचालन का अच्छा अनुभव है। ये सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहीं तथा कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति, मालवीय नगर, जयपुर की 2 बार उपाध्यक्ष रही। इस समिति में ये अब 2 कार्यकाल से अध्यक्ष हैं। ये सामाजिक पत्रिका 'कुमावत इंडिया' की सचिव भी हैं। ये सर्वकुमावत क्षत्रिय महासभा (रजि.) की जिलाध्यक्ष रही तथा अभी राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री हैं।

सेवानिवृत्ति बाद वर्ष 2023 में कांग्रेस पार्टी की सदस्यताग्रहण की, जहां इनकी सक्रिय भूमिका एवं प्रतिभा के कारण अनेक पदों पर रही। जनवरी 2024 से ये राज. प्रदेश कांग्रेस, ओबीसी विभाग की प्रदेश महासचिव हैं तथा प्रदेश प्रवक्ता के रूप में सेवाएं दे रही हैं। प्रदेश मीडिया चैनल्स में राजनैतिक डिबेट्स में ये दिग्गज राजनीतिज्ञों के साथ प्रभावी रूप से बहस करते देखी जा सकती हैं। जिसमें ये अपनी बात को बुद्धिमता एवं सौम्यता के साथ रखती हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार इनकी प्रशंसा करते हुए इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

समाज प्रतिभा

श्री धर्मेश कुमावत



श्री बंशी लाल कुमावत निवासी भुवाणा, उदयपुर के पुत्र श्री धर्मेश कुमावत ने RAS परीक्षा के तीसरे प्रयास में बेच 2024 में चयनित होकर **सामाजिक सुरक्षा अधिकारी** के पद पर नियुक्त हुए हैं।

इनकी स्कूल शिक्षा ज्योति सी. सै. स्कूल, फतेहपुरा, उदयपुर से हुई। तत्पश्चात इन्होंने इलेक्ट्रीक इंजीनियरिंग में B.Tech. किया। तत्पश्चात इनका चयन खान एवं भूविज्ञान विभाग में कनिष्ठ सहायक के पद पर हुआ। इसके बाद ये वाणिज्यिक सहायक, अजमेर विद्युत वितरण निगम में अपनी सेवाए दे रहे हैं। अपने निरन्तर प्रयासों से ये RAS परीक्षा में सम्मिलित होते रहे और अब सामाजिक सुरक्षा अधिकारी के पद पर चयनित हुए हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर धर्मेश कुमावत को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाए।

दिल्ली विधानसभा में गूंजी श्रेया कुमावत की आवाज

7 अक्टूबर 2026 को आयोजित राष्ट्रीय पर्यावरण बाल संसद-2026 में देशभर से चयनित 95 बाल प्रतिभागियों ने संसदीय शैली में पर्यावरण और सतत विकास से जुड़े विषयों पर चर्चा की। राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए शाहपुरा, राजस्थान की बाल प्रतिभा श्रेया कुमावत ने भी पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता और आने वाली पीढ़ियों की जिम्मेदारी को लेकर अपने विचार रखें।



यह एक बेटी की आवाज ही नही है बल्की हमारे समाज एवं प्रदेश का गौरव और स्वच्छ एवं सुरक्षित भविष्य का संकल्प भी है। राष्ट्रीय पर्यावरण बाल संसद में ऑन लाईन प्रतियोगिता से हजारों विद्यार्थियों में से श्रेया कुमावत का चयन हुआ था। श्रेया के अनुसार **प्रकृति की रक्षा ही भविष्य की सुरक्षा है।**

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से श्रेया कुमावत को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

बेसबॉल में हिमांशी ने जीता कांस्य पदक, बढ़ाया मान

मनासा की होनहार बेसबॉल खिलाड़ी हिमांशी पुत्री श्री तुषार कुमावत ने भोपाल में आयोजित 70वीं शालेय राज्य स्तरीय बेसबॉल प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक जीता है। बालिका 17 वर्ष वर्ग की यह प्रतियोगिता 15 से 19 सितंबर तक भोपाल के डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्टेडियम में आयोजित हुई। प्रतियोगिता में हिमांशी ने उज्जैन संभाग की टीम का प्रतिनिधित्व किया। तीसरे स्थान के लिए हुए



मुकाबले में उज्जैन संभाग ने सागर संभाग को 12-0 से शिकस्त देकर कांस्य पदक अपने नाम किया। टीम की इस उपलब्धि में हिमांशी के प्रदर्शन की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। हिमांशी एसबीआई बैंक के पूर्व मैनेजर श्री गोपाल कुमावत की पौत्री हैं। उनकी इस उपलब्धि पर परिजनों, खेलप्रेमियों एवं स्नेहीजनों ने खुशी जताते हुए हिमांशी और उज्जैन संभाग की पूरी टीम को बधाई दी तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

प्रतियोगिता में राजस्थान में पूनम का पहला स्थान



रामगढ़ स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 11वीं की छात्रा पूनम ने राज्य स्तरीय मेरे सपनों का भारत विकसित भारत चित्रकला प्रतियोगिता में पूरे राजस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। जवाहर कला केंद्र जयपुर में राज्य स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है, इसमें पूनम की पेंटिंग को पूरे राज्य में सर्वश्रेष्ठ चुना गया है, जिसके लिए उन्हें जयपुर में पुरस्कृत किया जाएगा। छात्रा पूनम की इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रमनलाल परमार ने खुशी जताई। पूनम की सफलता पर पूरे जिले में खुशी का माहौल है।

अर्नव कुमावत ने जिला स्तर पर जीता स्वर्ण पदक



70वीं जिला स्तरीय रायफल शूटिंग अंडर14 प्रतियोगिता में ए एन पब्लिक स्कूल, चौमू के छात्र व इलाइट शूटिंग रेंज के शूटर अर्नव कुमावत ने स्वर्ण पदक जीता है। अर्नव अब राज्य स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में जयपुर जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे। अर्नव का हाल ही में सीबीएसई नेशनल शूटिंग चैम्पियनशिप के लिए भी चयन हुआ है।

अर्नव को बहुत-बहुत बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भंदे बालाजी पहुंची पदयात्रा, ध्वज चढ़ाया



हिरनोदा श्री हनुमान चालीसा प्रबंध समिति की ओर से भंदे बालाजी की 41वीं पैदल यात्रा, में संत अमरनाथ के सानिध्य में श्रद्धालु पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ शामिल हुए। यात्रा का उगरियावास पहुंचने पर ग्रामवासियों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। धाम पर श्रद्धालुओं ने अखण्ड सिद्ध धूणी पर ध्वज चढ़ाया। बाद में 4100 श्रद्धालुओं ने एक स्वर में हनुमान चालीसा के पाठ कर हवन में आहुतियां दीं। यज्ञाचार्य नरेंद्र आर्य ने वैदिक मंत्रोच्चारों के बीच आहुतियां दिलाकर नाम जाप से अभिमंत्रित श्रीराम रक्षा सूत्र भेंट किए गए। इस मौके पर श्याम सुंदर मौसम, रामस्वरूप यादव, सरदार राजन सिंह, महेंद्र बड़ीवाल, महेश मारोठिया, हीरालाल मामोडिया, कल्याण मल कुमावत, कैलाश खोरानिया सहित बड़ी संख्या में ग्रामवासी व श्रद्धालु उपस्थित थे।

दांता नगरपालिका के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा पार्षदों का किया अभिनंदन



दांतारामगढ़। दांता नगरपालिका के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं पार्षदों के सम्मान में रविवार को कुम्हार कुमावत सामूहिक विवाह समिति एवं कुमावत समाज छात्रावास के प्रतिनिधियों की ओर से सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों का माला, साफा, दुपट्टा एवं शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया।

नगरपालिका अध्यक्ष भंवरलाल चेजारा एवं उपाध्यक्ष ओमप्रकाश कुमावत का माला, साफा एवं दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया गया। वहीं पार्षद नेमीचंद कुमावत, मुकेश कुमावत एवं कल्याण मल का माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया गया। पार्षद भंवरी देवी एवं सावित्री देवी का दुपट्टा एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। समारोह में अतिथियों ने नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों को शुभकामनाएं दीं तथा क्षेत्र के विकास, जनसमस्याओं के समाधान में सक्रिय भूमिका निभाने की अपेक्षा जताई।

समाज के गणमान्य लोग रहे मौजूद समारोह में पद्मश्री सुंडाराम कुमावत, कुम्हार-कुमावत सामूहिक विवाह समिति अध्यक्ष राधेश्याम काम्या, संयोजक मनोहर लाल चतेरा, कुमावत छात्रावास सीकर के उपाध्यक्ष एडवोकेट नवरंग लाल बींवाल, चिरंजी लाल भरोदिया, बसंत कुमावत, नीतेश पारमुवाल, सीताराम भौडीवाल, जानकी लाल मारवाल (मंत्री, विवाह समिति), शिवगोपाल भोडीवाल, बृजमोहन भाटी, शिवपाल किरोडिवाल, भवानी शंकर खोवाल, नारायण लाल घोडेला, डॉ खेताराम अडावनिया, प्रभात कुमावत, सुरेश कुमावत, खेताराम जलिंद्रा, दुर्गेश जलिद्रा, सुरेश नेमीवाल, राधेश्याम सिरस्वा एवं रमेश राजोरिया, मुरली मनोहर, हरिष कुमावत, सहित समाज के प्रतिनिधि एवं स्थानीय गणमान्यजन मौजूद रहे।

कुमावत समाज बॉक्स क्रिकेट सीजन-1 का आयोजन



Shoram Fashion और Zokazi Jewellers के तत्वावधान में कुमावत समाज बॉक्स क्रिकेट सीजन-1 का आयोजन जयपुर में 2 अक्टूबर 2026 को किया गया। इस टूर्नामेंट सीजन-1 के आयोजनकर्ता टीकेश कुमावत एवं कृष्ण कुमार डाल ने बताया कि कुमावत समाज की टीमों ने इस टूर्नामेंट में भाग लिया, जिन्हें राउंड रॉबिन के अनुसार मैच खिलाए गए। सांगानेर टाइगर्स ने कुमावत सुपर किंग्स को 3 विकेट से हराकर ट्रॉफी अपने नाम की।

मुख्य अतिथि सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामेश्वर बंबोरिया, राष्ट्रीय सलाहकार विमल अनावड़िया, डॉ. जय नारायण जूनवाल एवं सौभागमल बधानियां ने टूर्नामेंट की सराहना की और विजेता टीम को ट्रॉफी वितरित की।

Shoram Fashion की डायरेक्टर नीशा और Zokazi Jewellers की डायरेक्टर डॉ. कमलेश ने बताया कि इस टूर्नामेंट के आयोजन का उद्देश्य कुमावत समाज के युवाओं और बड़ों को क्रिकेट के माध्यम से सामाजिक एकता, समन्वय और भाईचारे का संदेश देना है। साथ ही, खेलों में प्रतिभावान खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर उनकी प्रतिभा को तलाशना और उन्हें आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करना है। ऐसे आयोजनों से आने वाली पीढ़ी को खेलों के प्रति प्रेरणा मिलेगी, ताकि बच्चे बचपन से ही राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए स्वयं को तैयार कर सकें।

संयोजक रामावतार अनावड़िया ने टूर्नामेंट को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी खिलाड़ियों,सहयोगियों एवं कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया गया।

70वीं राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 2026-27 में रोशन कुमावत का चयन

राजू लाल एवं निर्मला देवी का पुत्र तथा पी एम श्री जी एस एस एस विद्यालय, बोबास के छात्र रोशन कुमावत का चयन 70वीं राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता 2026-27 (हॉकी) में हुआ है। यह इनकी मेहनत, लगन और प्रतिभा से सम्भव हुआ है। रोशन कुमावत को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा जयपुर शहर इकाई

राष्ट्रीय अध्यक्ष के जन्मदिन पर रक्तदान शिविर एवं सम्मान समारोह का आयोजन





सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा की जयपुर शहर इकाई द्वारा 2 अक्टूबर 2026 को सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामेश्वर बम्बोरिया का जन्मदिन जयपुर में बडी धूमधाम से मनाया गया। 2 अक्टूबर 2026 को प्रात: 8 बजे महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामेश्वर बम्बोरिया, राष्ट्रीय मुख्य सलाकार श्री विमल कुमावत पूर्व उप महापौर, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जयनारायण जूनवाल राष्ट्रीय महामंत्री श्री रूप सिंह कारगवाल, राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती सोनिया डाल, राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती पिंकी बधानिया, राष्ट्रीय खेल मंत्री श्री सौभाग मल बधानिया, राष्ट्रीय संरक्षक श्री रमेश गेदर, सीनियर सीटीजन प्रकोष्ट के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहन लाल अजमेरा, जयपुर जिलाध्यक्ष श्री धनराज अनावडिया, जयपुर शहर इकाई कोषाध्यक्ष श्री गौरी शंकर मारवाल, संगठन मंत्री श्री राजसिंह बधानिया, संगठन मंत्री श्री तारा चंद, राष्ट्रीय युवामोर्चा महामंत्री श्री संजीव वर्मा, श्री रामगोपाल घोडेला, श्री राजेन्द्र राजोरा, श्री कैलाश चंद बडीवाल सहित सैकडों कार्यकर्ताओं द्वारा गायों को चारा खिलाया गया। प्रात: 11 बजे कुष्ठ रोगियों को फल एवं भोजन सामग्री का वितरण किया गया। उसके बाद उन्होंने रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया गया। इस रक्तदान शिविर में राजकीय कावंटिया अस्तपाल की टीम श्री फूल चन्द कुमावत के नेतृत्व एवं जे. के. लॉन अस्तपाल की टीम ने ब्लड डोनेशन शिविर शुरू कर महासभा के कार्यकर्ताओं द्वारा 50 यूनिट ब्लड का संग्रह किया गया। रक्तदाताओं को होस्पीटल इकाई द्वारा प्रमाण पत्र एवं महासभा की जयपुर शहर इकाई द्वारा हेलमेट का वितरण किया गया।

सायं 7 बजे महासभा जयपुर शहर इकाई द्वारा जयपुर शहर के नवनिर्वाचित नगर निगम के वार्ड नं. 18 से पार्षद **श्री अमर चंद कुमावत,** वार्ड नं. 1 से **श्री मोहन लाल कुमावत** को सम्मानित किया गया। सायं 8 बजे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामेश्वर बम्बोरिया के जन्म दिन पर केक सेरेमनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माधोराज पुरा खेडा बालाजी विवाह समिति के अध्यक्ष श्री जयनारायण जूनवाल, श्री रामेश्वर दम्बीवाल, श्री रामचन्द्र दम्बीवाल, श्री हनुमान जूनवाल एवं समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा 51 किलो फूलों की माला से श्री रामेश्वर बम्बोरया का स्वागत किया गया। श्री रामेश्वर बम्बोरिया के जन्म दिन के अवसर पर जयपुर शहर जिला इकाई के जिलाध्यक्ष श्री धनराज अनावडिया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री घनश्याम कुमावत, उपाध्यक्ष श्री रामकरण कुमावत, महामंत्री श्री राजसिंह बधानिया, कोषाध्यक्ष श्री गौरी शंकर कुमावत, संगठन एव प्रचार मंत्री श्री ताराचन्द सहित सभी कार्यकर्ता, जयपुर जिला देहात इकाई के जिलाध्यक्ष श्री गिरधारी कुमावत, महामंत्री श्री सुभाष कुमावत, विधानसभा विद्याधर इकाई के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण मारवाल, श्री जीवराज सिरोहिया, श्री बबलू माचीवाल, श्री घनश्याम बैरा, श्री मुन्ना लाल बगरानिया, श्री दीपक नरानिया, श्री प्रकाश नरानिया, श्री हर्ष नरानिया, चौमू शहर इकाई के राष्ट्रीय राजनैतिक चेतना मंत्री श्री अर्जुन लोहरवाडिया के साथ आये कार्यकर्ताओं एवं जयपुर सभा, आदि से आये सभी समाज बंधुओं द्वारा माला पहनाकर श्री रामेश्वर बम्बोरिया का स्वागत कर बधाई दी। महिला मोर्चा से श्रीमती रजनी सिरोहिया, श्रीमती किरण संगाठिया, श्रीमती माया कुमावत, श्रीमती संतोष कुमावत ने गुलदस्ता भेंट कर श्री रामेश्वर बम्बोरिया को बधाई दी गई। इस अवसर महासभा के पदाधिकारी एवं 500 के लगभग समाज बन्धु उपस्थित रहे।

इस अवसर पर कुमावत समाज की गायक टीम श्री राजेन्द्र राजोरा व श्री लोकेश संगाठिया द्वारा अपने स्वरों में फिल्मी गीतों की प्रस्तुति देकर सभी समाजजनो का मनोरंजन किया। आखिर में सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा की जयपुर शहर इकाई के अध्यक्ष श्री धनराज अनावडिया ने सभी को धन्यवाद दिया तथा सभी ने सुरुचि भोज का आनन्द लिया।

कुमावत वरिष्ठ नागरिक ट्रस्ट की चितौडगढ़ धार्मिक यात्रा सम्पन्न

कुमावत वरिष्ठ नागरिक ट्रस्ट उदयपुर के 170 सदस्यों की चित्तौड़गढ़ देव दर्शन यात्रा 13 अक्टूबर को श्रद्धा एवं उत्साह के साथ संपन्न हुई। यात्रा के दौरान घाटावाली माता, आवरी माता, भादेसर भेरूजी बावजी, जाटला माता, सांवरियाजी सेठ तथा ऊंटाला माता के दर्शन किए गए। चित्तौड़गढ़ निवासी समाजसेवी श्री सुरेश चंद्र साडीवाल एवं श्रीमती इंदिरा देवी साडीवाल के आतिथ्य में ढोल-नगाड़ों, आतिशबाजी, अल्पाहार एवं स्नेहभोज के साथ सदस्यों का आत्मीय स्वागत किया गया। इस अवसर पर श्री साडीवाल दंपत्ति द्वारा ट्रस्ट के भूमि कोष हेतु ?11,000 का सहयोग भी प्रदान किया गया। ट्रस्ट अध्यक्ष श्री हरिशंकर खंडारिया ने साडीवाल दंपत्ति का गहरा आभार व्यक्त किया। यात्रा ने धार्मिक आस्था, सामाजिक एकता एवं वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान का संदेश दिया।

फ्लाई दुबई फ्लाइट के भारतीय पायलेट स्मित मच्छार ने दिखाया अदम्य साहस



दुबई से इजरायल जा रही फ्लाईदुबई की फ्लाईट के घायल पायलट कैप्टन स्मित मच्छार भारतीय नागरिक हैं और गुजरात के रहने वाले हैं। स्मित अपने ओमानी को-पायलट के साथ फ्लाईदुबई की फ्लाइट को तेल अवीव लेकर जा रहे थे। इस दौरान ओमानी को-पायलट ने नमाज का बहाना कर उन पर चाकू से हमला कर दिया और उसने विमान के सिस्टमों को भी खराब करने की कोशिश की। इस हमले में स्मित मच्छार गंभीर रूप से घायल हो गए, लेकिन अपना हौसला नहीं खोया। क्रू मेम्बर्स और यात्रियों ने जब को-पायलट को काबू कर लिया, तब उन्होंने घायल होने के बावजूद बड़ी सूझबूझ के साथ विमान की सऊदी अरब के तबुक हवाई अड्डे पर इमरजेंसी लैंडिंग कर दी।

यह लैंडिंग बिलकुल भी आसान नहीं थी। यात्रियों ने बताया कि ओमानी को-पायलट ने कैप्टन स्मित मच्छार को नीचे गिरा दिया था और उन पर चाकू से हमले कर रहा था। सब जगह खून फैला हुआ था। कैप्टन स्मित मच्छार की आवाज तक नहीं निकल रही थी। इस दौरान सिर्फ 1 मिनट में विमान करीब 14000 फीट नीचे गिर गया। घायल पायलट और फर्स्ट ऑफिसर को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है। सऊदी अरब की इंटेलिजेंस एजेंसियों ने को-पायलट को गिरफ्तार किया और उससे पूछताछ की हैं।

आज पूरी दुनिया इस भारतीय पायलेट की प्रसंशा कर रही है जिनमें अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प व इजराइली प्रधानमंत्री नेतान्हू सम्मलित है। इजराइल ने उन्हे सम्मान देने के लिए अपने स्वतंत्रता दिवस पर आमंत्रित किया है तथा कहा कि स्मित की बहादुरी एवं अदम्भ्य साहस का इजरायल सदैव याद रखेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने भी कैप्टन स्मित मच्छार से अस्पताल में फोन से बातकर हालचाल जाना। तब कैप्टन स्मित ने बताया कि इस संकट की घड़ी में हनुमान चालिसा पाठ कर शक्ति अर्जित की। भारत में अनेक स्थानों पर कैप्टन स्मित के जल्दी स्वस्थ होने के लिए प्रार्थनाएं एवं पूजा की गई।

43 जोड़ो का सफल सामुहिक कार्यक्रम

पुला पँचायत द्वारा आयोजित सामूहिक अनन्त चतुर्दशी एवं अनबोली व्रत उद्यापन ऐतिहासिक सफलता की ओर प्रथम चरण में अनन्त चतुर्दशी व्रत उद्यापन के उद्यापन में 3000 समाजजनों का स्नेहभोज का आयोजन हुआ। आयोजन में कुमावत समाज के अन्य क्षेत्रों से पँचायत पदाधिकारी पधारे, जिनका पुलां पँचायत द्वारा उपरना ओढ़ाकर सम्मान किया। सम्मान की कड़ी में रण पिछोर चौकी संस्थान राजसमंद के सर्वश्री सुंदर सिंघनवाल, मोहनलाल, श्रीराम लाल, सुरेश एवं डॉ तेजराम, सूरजपोल पँचायत से कन्हैयालाल नाहर, मदन सिंह बाबरवाल एवं ललित बबेरिवाल, मुकुंदपुरा चाँदपोल से पुरुषोत्तम उदीवाल, श्यामजी सलवाड़िया, श्याम माननीया, रमेश भदानिया, हिम्मत माननीया देवाली पँचायत से रमेश गोठवाल, रामेश्वर बातरा, सकराम पूरा पँचायत से अनूप टांक भरत टांक, मोहित हटवा एवं जगदीश साड़ीवाल, प्रवासी कुमावत समाज से हरीश आसीवाल एवं वी एल मंडावरा सम्मिलित हुए। सभी ने इस कार्यक्रम की भव्यता एवं आयोजन कमेटी की सराहना की।

- पुला पँचायत

कुमावत समाज ने कर्नाटक के राज्यपाल को सौंपा ज्ञापन



बेंगलुरु। कुमावत समाज की ओर से कर्नाटक के राज्यपाल को OBC की सूची में 'कुमावत' नाम को स्वतंत्र रूप से दर्ज करने एवं शामिल करने की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा गया।

समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने बताया कि स्कूल रिकॉर्ड, जाति प्रमाण-पत्र एवं जनगणना सहित विभिन्न सरकारी दस्तावेजों में कुमावत समाज के लोगों को नाम दर्ज करवाने में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। समाज की ओर से मांग रखी गई कि 'कुमावत' नाम को स्वतंत्र रूप से OBC वर्ग में दर्ज किया जाए, ताकि समाज के लोगों को भविष्य में किसी प्रकार की प्रशासनिक परेशानी न हो। ज्ञापन के दौरान राज्यपाल की ओर से मामले में राज्य सरकार को सूचित करने तथा उचित प्रक्रिया के माध्यम से 'कुमावत' नाम को OBC में दर्ज करवाने की दिशा में कार्रवाई का आश्वासन दिया गया।

इस अवसर पर कुमावत समाज के कई सम्मानित पदाधिकारी एवं समाजबंधु उपस्थित रहे। इनमें मयलसंद्रा के पूर्व अध्यक्ष गोवर्धनलाल् दुबलदिया, अध्यक्ष ओमप्रकाश गुगान, कुमावत समाज बैंगलोर सिटी कोटनपेट के अध्यक्ष जीवाराम कूमियाल, कुमावत समाज मार्गुण्डनहल्ली के अध्यक्ष नरेन्द्र गोयल तथा कुमावत क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव प्रकाश मावर सहित समाज के अन्य प्रतिनिधि मौजूद रहे।

समाज के पदाधिकारियों ने कहा कि यह पहल समाज के लोगों को दस्तावेजी एवं प्रशासनिक स्तर पर होने वाली परेशानियों से राहत दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है।

दीपावली: चेतना का महापर्व और आत्मिक आलोक का उत्सव



''घर-घर माँड रहे सब आँगन,
हृदय-हृदय में उत्सव-आवाहन।
कंचन-थाल लिए अगणित कर,
उतार रहे आरती सादर।
आज अयोध्या की गलियों में,
फूट रही खुशियों की कलियाँ।''

— मैथिलीशरण गुप्त

दीपावली यानी दीयों की रोशनी से भरपूर माहौल, लक्ष्मी पूजा और उत्सव का उल्लास। ऊपरी तौर पर यह त्योहार भले ही एक सामाजिक और पारंपरिक उत्सव दिखाई देता हो, लेकिन अपने भीतर यह अगाध आध्यात्मिक और दार्शनिक रहस्यों को समेटे हुए है।

यह केवल एक ऐतिहासिक घटना की पुनरावृत्ति नहीं है। यह वही पावन तिथि है जब **भगवान श्री राम** लंका पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे थे, और यह वही अलौकिक दिन भी है जब **बालक नचिकेता** यमराज से आत्मज्ञान का परम गूढ़ रहस्य सीखकर पृथ्वी पर वापस आए थे। यदि हम इतिहास और संस्कृति की परतों को गहराई से टटोलें, तो दीपावली का स्वरूप केवल एक कहानी तक सीमित नहीं है। यह मानव चेतना का एक बहुआयामी और क्रमिक विकास है। लगभग 3,000 वर्ष पुराने इतिहास को समेटे हुए यह पर्व एक साधारण कृषि उत्सव से रूपांतरित होकर आज वैश्विक स्तर पर '**अंधकार पर प्रकाश की विजय**' का सबसे बड़ा प्रतीक बन चुका है।

भारतीय पंचांग के अनुसार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाने वाला यह पर्व पाँच दिनों के उत्सव (धनतेरस, नरक चतुर्दशी, लक्ष्मी पूजन, गोवर्धन पूजा और भाई दूज) की एक पूरी श्रृंखला है। दीपावली की सबसे बड़ी विशेषता इसकी समावेशिता है। यह किसी एक धर्म या संप्रदाय तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न संस्कृतियों के ऐतिहासिक मील के पत्थरों को खुद में समेटे हुए है:

सनातन परंपरा: उत्तर भारत में जहाँ **यह राम राज्य की स्थापना और न्याय की जीत** का प्रतीक है, वहीं पश्चिमी और दक्षिण भारत में इसे **भगवान कृष्ण द्वारा अत्याचारी नरकासुर के वध (नरक चतुर्दशी)** के रूप में मनाया जाता है। बंगाल में यही समय माँ काली की '**काली पूजा**' का होता है, जो शक्ति और आंतरिक बुराइयों के विनाश को दर्शाती है।

जैन धर्म (निर्वाण दिवस): जैन संस्कृति में इस रात का महत्व अत्यधिक गहरा है। इसी कार्तिक अमावस्या के दिन 527 ईसा पूर्व में अंतिम तीर्थंकर, भगवान महावीर ने पावापुरी में मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त किया था। उनके द्वारा फैलाई गई ज्ञान की लौ को जीवित रखने के लिए इस दिन दीप जलाए जाते हैं।

सिख धर्म (बन्दी छोड़ दिवस): वर्ष 1619 में इसी दिन छठे गुरु, गुरु हरगोबिंद साहिब जी, ग्वालियर के किले से 52 हिंदू राजाओं को मुगल कैद से सुरक्षित मुक्त करवाकर पवित्र स्वर्ण मंदिर, अमृतसर लौटे थे। इसलिए सिखों के लिए यह स्वाधीनता और न्याय का पर्व है।

बौद्ध धर्म (नेवार बौद्ध): नेपाल के नेवार बौद्ध समुदाय के लोग इस दिन को सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने और दीपदान करने की स्मृति में हर्षोल्लास से मनाते हैं।

व्यावहारिक धरातल पर, दीपावली को 'शारदा पूजन' या 'बही-खाता पूजन' के माध्यम से व्यापारियों के लिए एक वित्तीय नववर्ष के रूप में भी देखा जाता है। यह पुराने हिसाब-किताब को बंद कर, पुराने मतभेदों को भुलाकर नए संकल्पों के साथ शुरुआत करने का समय है। घर की साफ-सफाई और रंगोली केवल सौंदर्यशास्त्र नहीं, बल्कि मानसिक स्वच्छता, अनुशासन और सकारात्मक ऊर्जा के स्वागत की तत्परता को दर्शाती है। इस प्रकार, दीपावली बाहरी चकाचौंध से आगे बढ़कर मानव चेतना के क्रमिक विकास और आत्म-साक्षात्कार का अनुपम प्रतीक है।

1. प्रकाश की पंक्तियाँ और दीपक का गूढ़ रहस्य

'दीपावली' का शाब्दिक अर्थ है 'प्रकाश की पंक्तियाँ'। जीवन बहुआयामी है और इसके प्रत्येक पहलू पर ज्ञान का प्रकाश डालना अनिवार्य है। हमारे भीतर छिपे गुण—जैसे किसी में प्रेम, किसी में सहिष्णुता, उदारता तो किसी में संगठन की शक्ति—ये सब एक-एक दीपक के समान हैं। केवल एक दीया जलाकर संतुष्ट न हों, बल्कि अज्ञानता के अंधकार को मिटाने के लिए हजारों दीपक प्रज्ज्वलित करने की आवश्यकता है।

इस संदर्भ में तेल के दीपक का दर्शन भी अत्यंत अनूठा है। दीपक को जलाने के लिए बत्ती को तेल में डुबाना पड़ता है।

यदि बत्ती पूरी तरह तेल में डूब जाए, तो वह जल नहीं पाएगी; इसलिए उसे थोड़ा सा बाहर निकालकर रखा जाता है। इसका आध्यात्मिक संदेश यह है कि हमारा जीवन भी इस बत्ती की तरह है। हमें इस संसार (तेल) में रहना तो है, परंतु इसके भौतिकवाद में पूरी तरह डूबना नहीं है। संसार में रहते हुए भी जब हम इससे थोड़े अछूते रहते हैं, तभी हम अपने जीवन में ज्ञान और आनंद का सच्चा प्रकाश फैला सकते हैं।

2. पटाखों का मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक अर्थ

दीपावली पर पटाखे जलाने की परंपरा के पीछे हमारे पूर्वजों का एक गहरा मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक अभ्यास छिपा है। जीवन की आपाधापी में हम अक्सर क्रोध, लालसाओं, निराशा और विद्वेष को दबाते रहते हैं, जिससे मन भीतर ही भीतर

एक 'विस्फोट बिंदु' (Bursting Point) तक पहुँच जाता है।

पटाखों का फूटना हमारी इन्हीं दमित भावनाओं और नकारात्मक ऊर्जा को मुक्त करने का माध्यम है। जब हम बाहर एक धमाका और उसके बाद फैलने वाला प्रकाश देखते हैं, तो हमारे भीतर भी उसी प्रकार की संवेदना जाग्रत होती है। इस मानसिक विरेचन (Catharsis) के बाद मन में एक गहन और असीम शांति का उदय होता है।

3. आत्मा की शुद्धि और लक्ष्मी पूजन का मर्म

दीपावली के अवसर पर घरों के कोने-कोने की विशेष सफाई की जाती है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, यह बाहरी स्वच्छता हमारी आंतरिक शुद्धि (मन और आत्मा की सफाई) का प्रतीक है। काम, क्रोध, लोभ और अहंकार के कूड़े को साफ किए बिना हम उच्चतम आत्मिक स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकते।

इसी प्रकार, लक्ष्मी पूजन को लोग अक्सर केवल भौतिक धन-संपत्ति से जोड़कर देखते हैं, जबकि इसका वास्तविक उद्देश्य आत्मिक समृद्धि और संतोष की प्राप्ति है। सच्चा धन भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि मन की तृप्ति में है।

- चाणक्य ने अर्थशास्त्र में कहा है— ''धर्मस्य मूलं अर्थः'' अर्थात् संपन्नता ही धर्म का आधार है।
- इस दिन अपनी धन-संपदा को सामने रखकर अभाव का नहीं, बल्कि प्रचुरता (संतुष्टि) का अनुभव किया जाता है। जब हम ध्यान प्रचुरता पर केंद्रित करते हैं, तो जीवन में समृद्धि और बढ़ती है।

4. उपहार, मधुरता और सेवा भावना

दीपावली के दौरान मिठाइयों और उपहारों के आदान-प्रदान का अर्थ है—भूतकाल की सभी खटास और कड़वाहट को मिटा देना। यह समय पुरानी आपसी कलह, पश्चाताप और भविष्य की चिंताओं को छोड़कर पूर्णतः वर्तमान क्षण में जीने और मित्रता को नवजीवन देने का है।

लेकिन कोई भी उत्सव तब तक अधूरा है जब तक उसमें सेवा भावना न जुड़ी हो। प्रकृति और ईश्वर से हमें जो भी प्रचुरता मिली है, उसे दूसरों के साथ साझा करना ही सच्चा उत्सव है। ज्ञान और आनंद को जब हम समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति तक बाँटते हैं, तभी यह पर्व पूर्ण होता है।

हर क्षण को दिवाली बनाना

यजुर्वेद का एक अत्यंत पवित्र मंत्र है— ''तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'' अर्थात् हमारे इस मन से सदा मंगलकारी इच्छाएँ ही प्रकट हों।

जिन्हें आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है, उनके लिए दीपावली वर्ष में केवल एक बार आती है; परंतु जो आत्मज्ञानी हैं, उनके लिए हर दिन और हर क्षण दीपावली है। यदि हमारे परिवार या समाज का एक भी सदस्य दुःख के तिमिर (अंधेरे) में डूबा है, तो हमारा उत्सव अधूरा है।

आइए, इस वर्ष ज्ञान के साथ दीपावली मनाएँ और मानवता की सेवा का संकल्प लें। अपने हृदय में प्रेम का दीया, घर में प्रचुरता का दीया, दूसरों के लिए करुणा का दीया और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का दीपक जलाकर खुद को और पूरे संसार को आलोकित करें।

जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना, अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।
सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में, कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी, कि जब तक रहा एक भी नर विलासी।

– गोपालदास 'नीरज'

-डॉ. प्रिया मारवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर

जानकी जानती थी

हिरण जो सोने का मांग बैठी सिया,
ये ना समझना सच में नादां थी ?
सैकड़ों ऋषियों के तप से जन्म पाने वाली
धरा को चीर कर अपना अस्तित्व धरा पर लाने वाली
और धरा को चीर कर उसमें समाने वाली
एक कुशा की ढाल से अपना सतीत्व बचाने वाली
तज कर विलासिता संग राम के वन को जाने वाली
लाड़ी जनकसुता राजरानी कष्टी वन वास अपनाने वाली
कड़ी विपदा में सहचरी बन राम का साथ निभाने वाली
वैदेही
एक मृग पर मुग्ध हो विवेकहीन हो जाती,
क्या सम्भव था... ?
नारी मन की गूढ़ता को, नादानी में छुपी घी, मेधा को
ना समझ तुम कभी ना समझ पाए
कि जब तक संग रहेगी सीता, राम वध ना कर पाऐंगे
सीता के तप बल से, जग को ना वो तरा पाएंगे
ना रावण का वध कर पाएंगे,
ना प्रेमी राम संहारक बन पाऐंगे
जानकी जानती थी...
दूर तो रहना ही पड़ेगा, विरह तो सहना ही पड़ेगा
मनस्वी राम कहलाएंगे तभी,
निर्बुद्धि सीता को बनना ही पड़ेगा।

- उर्वशी बालोदिया

रूप चतुर्दशी: सौंदर्य और पवित्रता का महापर्व

रूप चतुर्दशी सनातन धर्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण त्योहार है। इसे 'नरक चतुर्दशी', 'काली चौदस' और 'छोटी दिवाली' के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है। पांच दिनों तक चलने वाले दिवाली पर्व का यह दूसरा दिन होता है। यह त्योहार मुख्य रूप से शारीरिक और आंतरिक सौंदर्य, स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य को समर्पित है।

धार्मिक मान्यता और कथाएं : इस पर्व से जुड़ी कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। सबसे प्रमुख कथा भगवान श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर वध की है। नरकासुर नामक असुर ने 16,000 कन्याओं को बंदी बना रखा था और देवताओं को भी प्रताड़ित कर रहा था। कार्तिक चतुर्दशी के दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी पत्नी सत्यभामा की सहायता से नरकासुर का वध किया और सभी कन्याओं को मुक्त कराया। जेल से मुक्त होने के बाद, इन कन्याओं को समाज में सम्मान दिलाने के लिए श्रीकृष्ण ने उन सभी से विवाह किया। नरकासुर के आतंक से मुक्ति मिलने की खुशी में अगले दिन (अमावस्या को) पूरी द्वारका को दीयों से सजाया गया, जिसे हम दीपावली के रूप में मनाते हैं।

एक अन्य कथा के अनुसार, इस दिन यमराज की पूजा की जाती है। माना जाता है कि इस दिन यमराज के निमित्त दीपदान करने से अकाल मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है और नरक के कष्टों से मुक्ति मिलती है।

परंपराएं और उबटन का महत्व : रूप चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करने का विशेष महत्व है। इसे 'अभ्यंग स्नान' कहा जाता है। इस दिन लोग कच्चे दूध, हल्दी, चंदन, बेसन और गुलाब जल से बना पारंपरिक उबटन अपने शरीर पर लगाते हैं। इसके बाद तेल मालिश करके स्नान किया जाता है। माना जाता है कि ऐसा करने से त्वचा चमकदार बनती है, रूप निखरता है और वर्षभर स्वास्थ्य उत्तम रहता है। स्नान के जल में अपामार्ग (चिचड़ी) के पत्ते डालकर सिर पर घुमाने की भी परंपरा है, जिससे नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है। आजकल महिलाएँ इस दिन सजने-संवरने ब्यूटी पार्लर भी जाने लगी हैं।

दीपदान और उत्सव : शाम के समय घर के मुख्य द्वार, आंगन और नालियों के पास चौमुखी दीपक (चार बत्तियों वाला दीया) जलाया जाता है। इसे 'यम का दीपक' कहते हैं। यह दीपक दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके रखा जाता है, क्योंकि दक्षिण दिशा को यमराज की दिशा माना जाता है। लोग अपने घरों की अच्छी तरह सफाई करते हैं ताकि मां लक्ष्मी का आगमन हो सके।

निष्कर्ष : संक्षेप में कहें तो, रूप चतुर्दशी केवल बाहरी रूप-रंग को चमकाने का दिन नहीं है। यह हमारे मन की बुराइयों, आलस्य और नकारात्मकता को दूर कर आंतरिक रूप को भी सुंदर बनाने का संदेश देता है। यह पर्व हमें सिखाता है कि स्वच्छता और स्वास्थ्य ही वास्तविक सौंदर्य हैं।

करवा चौथ दाम्पत्य प्रेम को बढ़ाने वाला व्रत

तप और करुणा से भरे हैं, महिलाओं के व्रत-त्योहार

कहते हैं महर्षि अगत्स्य ने विशाल महासागर को सिर्फ दो चुल्लू में पी लिया था इसी तरह यदि भारतीय नारी के समूचे व्यक्तित्व को सिर्फ दो शब्दों में मापना हो तो वे दो शब्द होंगे - **'तप' एवं 'करुणा।'** इन दो शब्दों में निहित भावनाओं से बचपन से ही उसका अस्तित्व ओत-प्रोत रहता है। जैसे-जैसे वह बड़ी होती जाती है, ये भावनाएँ भी परिपक्व एवं प्रगाढ़ होती जाती हैं। इस परिपक्वता एवं प्रगाढ़ता में उसका तप प्रखर होता है, करुणा उदात्त बनाती है। भारतीय नारी के जीवन में ये दोनों ही अन्योन्याश्रित हैं। उसके तप का प्रेरणा स्त्रोत है करुणा ओर करुणा की अभिवृद्धि होती है, दिन पर दिन बढ़ने वाले तप की प्रखरता से।

उसकी यह तप, करुणा ही उसके द्वारा अनुष्ठित व्रत-उपवासों में दिखाई देती है। महिलाओं के द्वारा किया जाने वाला हर व्रत किसी न किसी विशेष तप से अनिवार्य रूप से सम्बन्धित है। वे व्रत उसकी कोरी भावुकता नहीं है। इसके पीछे ऋषि प्रणीत विज्ञान है। उत्तरायण, दक्षिणायन की गोलार्द्ध स्थिति, चन्द्रमा की घटती-बढ़ती कलाएँ, नक्षत्रों का भूमि पर आने वाला प्रभाव, सूर्य की अंश किरणों का मार्ग, इन सबका महिलाओं की शरीरगत ऋतु अग्नियों के साथ सम्बन्ध होने से विशिष्ट परिणाम को ध्यान में रखकर ही इनका निर्धारण किया गया है। बदलते समय के बावजूद महिलाओं के हर व्रत की अपनी विशेषता है।

कार्तिक कृष्ण पक्ष के चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी को करवा चौथ किया जाता है। यह स्त्रियों का मुख्य व्रत है। इस दिन का उपवास दाम्पत्य प्रेम को बढ़ाने वाला होता है। क्योंकि उस दिन की गोलार्द्ध स्थिति, चन्द्रकलाएँ, नक्षत्र प्रभाव एवं सूर्यमार्ग का सम्मिश्रण शरीरगत अग्नि के साथ समन्वित होकर शरीर एवं मन की स्थिति को ऐसा उपयुक्त बना देता है, जो दाम्पत्य सुख को सुदृढ़ और चिरस्थायी बनाने में बड़ा सहायक होता है।

इन व्रतों में प्राय: अधिकांश को भारतीय नारियों द्वारा पूरा करते देखा जा सकती है। कठोर तप-तितीक्षा, छलकती संवेदना से भरे हृदय के लिए वह स्वयं को तिल-तिल करके गलाती रहती है। अपने तप के द्वारा घर की समस्त आपदाओं विपदाओं, संकटों का शमन करती रहती है। उसकी इसी तपश्चर्या के कारण भारत की परिवार संस्था इन विषम परिस्थितियों में भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है और आगामी दिनों में यही उज्ज्वल भविष्य का आधार बनेगी।

साभार : पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

दीपावली के दिन कैसे करें घर की सजावट

घर की साफ-सफ़ाई के बाद बारी आती है घर को सजाने की। सजावट से न सिर्फ घर की शोभा दुगुनी हो जाती है, बल्कि सुख, सौभाग्य और समृद्धि की प्राप्ति भी होती है। दीपावली पर घर की सजावट कैसे करनी चाहिए? चलिए, हम बताते हैं।

तोरण

- गेंदे के फूलों और आम के ताज़े पत्तों से बने तोरण से घर के मुख्य द्वार को सजाएं। इससे सफलता, सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
- मुख्य द्वार को सजाने के लिए बाज़ार में उपलब्ध तोरण भी ख़रीद सकते हैं।

दीये

- इलेक्ट्रॉनिक या कैंडल की बजाय घर के कोने-कोने में दीये जलाएं।
- दीयों में लक्ष्मी, गणेश, कुबेर और इंद्रदेव के लिए चार बत्ती लगाएं।

रंगोली

- मुख्य द्वार के ठीक सामने और पूजा घर में रंगोली बनाएं।
- रंगोली के लिए हल्दी, चंदन, चावल के आटे आदि का इस्तेमाल करें, ये पवित्रता के प्रतीक माने जाते हैं।

पद चिह्न

- माता लक्ष्मी के पद चिह्नों को मुख्य द्वार से चिपकाते हुए अंदर पूजा घर तक ले जाएं, जैसे माँ लक्ष्मी मुख्य द्वार से पूजा घर में प्रवेश कर रही हो।
- अन्य मांगलिक चिह्न जैसे ओम, स्वस्तिक आदि से भी घर सजा सकते हैं,

लाइट्स

- पीली, गोल्डन और व्हाइट शेड की लाइटों से घर को रोशन करें। कार्यालय के लिए ग्रीन कलर की लाइट चुनें।
- रेड कलर की लाइटिंग घर या ऑफिस में न लगाएं, इससे धन की हानि होना माना जाता है।

ताज़े फूल

- फूल सकारात्मक ऊर्जा को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। दीपावली की सुबह अपने घर-आंगन को फूल से सजाएं।
- गुलाब, लिली और गेंदे के फूल सजावट के लिए ज़्यादा ठीक हैं।

कैसे मनाएं सुरक्षित दीपावली



दीपावली खुशियों का त्यौहार है। इस दिन पूरे भारत वर्ष में लोग दीयों की पंक्ति से अपने घर को रोशन करते हैं। त्यौहार की खुशियों में जरा सी असावधानी से ग्रहण लग सकता है। इसलिए थोड़ी सावधानी बरतकर इस त्यौहार को आनन्दित बनाए रखा जा सकता है। आइए, जानते हैं कि क्या सावधानियां रखनी चाहिए-

दीपावली पर सीढ़ियों तथा सकड़े स्थान पर दीपक नहीं जलाएं। इसके पास से आने-जाने पर कपड़ों से दीपक से टच होने की सम्भावना रहती है।

दीपावली पर छोटे बच्चे तो क्या बड़े-बड़े ही पटाखों के मोह से नहीं छूट पाते। पटाखे चलाने में हमें विशेष ध्यान देना चाहिए:

- सदैव ब्राण्डेड तथा अच्छी क्वालिटी के पटाखे ही खरीद कर लाएं।
- पिछले साल के बचे हुए पटाखे न जलाएं।
- पटाखे चलाते समय सुरक्षा के लिए चश्मा पहनना ठीक रहता है जिससे धुंआ एवं चिंगारी से बचाव होता है।
- पटाखे चलाते समय चप्पल, जूते जरूर पहनें तथा सिल्क एवं ज्वलनशील धागों से बने कपड़ों का उपयोग करने से बचें।
- पटाखों को खुले स्थान पर जमीन पर रखकर ही चलाएं। इन्हें न तो हाथ में चलाए न बॉलकनी में रखकर चलाए।
- पटाखे चलाते समय एक बाल्टी पानी पास में रखें तथा जले हुए पटाखे तथा फूलझड़ियां उसमें डालते रहें। यदि इस दौरान आग लग जाए तो यह पानी काम में लिया जा सकता है।
- पटाखे चलाते समय ध्यान रहें कि शेष पटाखे थोड़ा दूर हो।
- छोटे बच्चे पटाखे चलाएं तो उन्हें बड़ों की निगरानी में ही चलाने देवें।
- अपना फर्स्ट एड किट पटाखे चलाते समय अवश्य तैयार रखें।

नोट : पटाखों से निकलने वाली धूँआ के साथ सल्फर डाईआक्साइड और नोइट्रोजन ऑक्साइड जैसे गैसें तथा लैड जैसे पार्टीकल की वजह से अस्थमा एवं दिल के रोगियों की परेशानी बढ़ सकती है। तेज आवाज के पटाखों से पशु-पक्षियों तथा बच्चों को अत्यधिक असुविधा हो सकती है। अत: ग्रीन पटाखों का उपयोग ही किया जाना ठीक है।

दीपावली का अर्थ हर व्यक्ति के लिए अलग

दीपावली केवल परंपरा नहीं, अस्तित्व की निरंतरता है। हर युग एवं परिस्थिति में, जब भी अंधकार गहराता है, मनुष्य अपने भीतर से दीपावली खोज लेता है- कभी प्रेम के रूप में, कभी कला के, कभी करुणा के और कभी कविता के, क्योंकि अंततः मनुष्य का अर्थ ही प्रकाश है और दीपावली उसी अर्थ की **पुनर्स्मृति।**

दीपावली पर्व भारतीय आत्मा का आलोकित उत्सव है, अंधकार से संवाद करने की कला है और निराशा के बीच आशा का दीप जलाने का नाम है। हर वर्ष जब कार्तिक अमावस्या आती है, तब समूचा भारत जैसे एक साथ सांस लेता है। गांव की गलियां हों या महानगर की ऊंची इमारतें, हर जगह कोई न कोई दीप किसी स्मृति, किसी प्रार्थना, किसी सपने के नाम जलता है। यह रोशनी बाहर जितनी दिखती है, भीतर उतनी ही उतरती है, क्योंकि दीपावली बाहरी उजास से अधिक भीतर के अंधेरे को पहचानने और उसे प्रेमपूर्वक आलोकित करने की प्रक्रिया है।

मिट्टी के दीये का अपना सौंदर्य है। वह भले ही छोटा हो, पर उसका प्रकाश सबसे कोमल और सबसे सच्चा होता है। उसमें मनुष्य का परिश्रम है, धरती की गंध है और आस्था की गर्मी है। वह दीप जब जलता है, तब लगता है जैसे किसी किसान की हथेली, किसी मां के नेत्र, किसी बच्चे की हंसी सब मिलकर उस लौ को थरथरा रहे हों। यही मिट्टी का दीया कहता है कि जो झुकता है, वही जलता है, जो मिटता है, वही प्रकाशित होता है।

दीपावली का उत्सव केवल लक्ष्मी की आराधना नहीं है, बल्कि श्रम और सौंदर्य, करुणा और स्मृति, उत्सव और साधना का संगम है। इस दिन हर व्यक्ति, चाहे गरीब हो या अमीर अपना घर-द्वार सजाता है। यह सजावट केवल भौतिक नहीं, मनोवैज्ञानिक भी है। यह सजाने, संवारने, संजोने का उत्सव है- जैसे हम अपने भीतर के अस्त-व्यस्त भावों को भी दीपों की पंक्तियों में सजा दें।

अंधकार प्रकाश का शत्रु नहीं, उसका आवश्यक आधार है। बिना अमावस्या के चांद का अर्थ अधूरा है। दीप का सौंदर्य तभी खिलता है, जब उसके चारों ओर घना अंधेरा हो। जीवन भी ऐसा ही है। अंधकार हमें प्रकाश का मूल्य सिखाता है, दुख हमें आनंद की गरिमा दिखाता है और हानि हमें प्रेम की गहराई समझाती है। जब सांझ उतरती है और बच्चे पहली फुलझड़ी जलाते हैं तो आकाश में केवल चिंगारियां नहीं उठतीं, वहां हजारों इच्छाएं भी उड़ती हैं। दीपावली का प्रकाश वस्तुतः उन अनगिनत स्वप्नों का प्रतिरूप है, जो मनुष्य के हृदय में सदा जलते रहते हैं। जब चारों ओर दीपों की पंक्तियां थिरक रही होती हैं और हवा में एक अजीब शांति होती है। यह क्षण वह है जब मनुष्य अपने भीतर के ईश्वर से मिलता है उस छोटी सी लौ में, जो बाहर भी है और भीतर भी।

दीपावली का अर्थ हर व्यक्ति के लिए अलग है। किसी के लिए यह संपन्नता का प्रतीक है, किसी के लिए मिलन का और किसी के लिए स्मृति का। बूढ़ी मां जब पुराने दीयों को साफ करती है तो हर दीए में उसे बीते वर्षों की परछाई दिखती है। अब वह दीया जलाती है तो उसमें एक तरह की मौन प्रार्थना होती है कि उजाला केवल घर का न हो, मन का भी हो। साहित्य में दीपावली केवल एक दृश्य नहीं, एक प्रतीक है-**प्रकाश का, ज्ञान का, सत्य का।** किसी ने इसे राम के अयोध्या लौटने का उत्सव कहा, किसी ने आत्मा की विजय का, किसी ने प्रेम के पुनर्जन्म का, पर सबका सार एक ही रहा- अंधकार से प्रकाश की ओर, भय से विश्वास की ओर, बाह्य से अंतर की ओर यात्रा।

संस्कृति के स्तर पर दीपावली हमें यह सिखाती है कि उत्सव केवल प्रदर्शन नहीं, संवेदना है। यह पर्व हमें जोड़ता है- परिवारों से, पड़ोसियों से और यहां तक कि अजनबियों से भी। एक दीप किसी और के द्वार रख देना, यह बताना है कि हम साथ हैं, हम एक ही प्रकाश में जी रहे हैं। यही भारतीयता का हृदय है- **'तमसो मा ज्योतिर्गमय।'** जब रात गहराती है और दीप धीरे-धीरे बुझने लगते हैं, तब भी उनकी लौ की छाया दीवारों पर बनी रहती है। वह छाया एक स्मृति बन जाती है कि उजाला क्षणभंगुर है, पर उसका प्रभाव अनंत। शायद इसी भाव से कवि कहता है-**जो दीप जलता है, वह बुझता नहीं, वह हृदय में उतर जाता है।**

दीपावली का सबसे गहन अर्थ यही है- भीतर का दीप जलाना। यह भीतर का दीप तब तक नहीं जलता, जब तक हम अहंकार की कालिख न मिटा दें, ईर्ष्या का धुआं न हटाएं और स्वार्थ की ठंडी राख को न झाड़ दें। जब भीतर की सफाई हो जाती है, तब हर मन स्वयं दीप बन जाता है। जैसे हर घर में नहीं, हर आत्मा में दीपावली मनाई जा रही हो। वहां कोई शोर नहीं, कोई आतिशबाजी नहीं- सिर्फ एक धीमी, निर्मल, आत्मीय रोशनी।

वही सच्ची दीपावली है- जो संसार को नहीं, आत्मा को आलोकित करती है। उसी क्षण मनुष्य देवत्व को छू लेता है।

प्रकाश का यह पर्व मनाते हुए हमें पटाखे से फैलने वाले वायु एवं ध्वनि प्रदूषण का ध्यान रखना चाहिए। इससे बच्चों, बुजुर्गो तथा पशु-पक्षियों में घबराहट होती है। जिससे दूसरों को दुख पहुंचता है, ऐसा हमें नहीं करना है। हम सभी में प्रसन्नता फैलाये और इन सभी विकारों को दूर करे, तभी हम सभी की स्वास्थ्य रक्षा होगी व मंगल होगा तथा दीपावली मनाना सार्थक होगा।

- अज्ञात

लक्ष्मी पूजन कैसे करें ?

- दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन का बहुत महत्व होता है। इस शुभ अवसर पर लक्ष्मीजी को पूजने से उनकी कृपा दृष्टि भक्तों पर बनी रहती है।
- लक्ष्मी पूजन उत्तर दिशा में करें। उत्तर दिशा का संबंध धन-संपत्ति से होता है, उत्तर दिशा में लक्ष्मी जी की पूजा करने से शीघ्र लाभ मिलता है।
- निजी ऑफिस में भी लक्ष्मीजी की पूजा के लिए उत्तर दिशा चुनें। इस दिशा में अलमारी, लॉकर आदि रखने से धन में बढ़ोतरी होती है, पैसों की कमी कभी नहीं होती।
- लक्ष्मी पूजन सही मुहूर्त में करें। मुर्हत को ध्यान में रखकर पूजा करने से शीघ्र लाभ की प्राप्ति होती है।



यूं करें विधिवत् पूजा

- विवाहित हैं तो सपत्नीक लक्ष्मी पूजा में बैठें।
- पहले माता लक्ष्मी, भगवान गणेश, कुबेर एवं इंद्र देव की मूर्ति को अच्छे कपड़े से साफ़ कर लें।
- मूर्तियों को पूजा घर की उत्तर-पूर्व दिशा में रखें, पहले लक्ष्मीजी, फिर गणेश, कुबेर और आखिर में इंद्र देव।
- इसके बाद पूजा घर की पूर्व या उत्तर दिशा में साफ़ पानी से भरा तांबे या कांसे का कलश रखें तथा कलश पर ओम एवं स्वास्तिक का चिह्न बनाएं। माता लक्ष्मी के समक्ष कमल का फूल चढ़ाएं। एक चांदी का सिक्का पूजा में रखें।
- पूजा की थाली में हल्दी, कुमकुम, केसर, चावल, मिठाई आदि रखें तथा माता के सामने नारियल भी रखें।
- लक्ष्मी पूजन हेतु दीपक, सुगंधित धूपबत्ती और अगरबत्ती जलाएं। मिट्टी के दीये में शुद्ध देशी घी डालकर दीपक को माँ लक्ष्मी के समक्ष जलाएं।
- सबसे पहले भगवान गणेश की विधिवत पूजा करें।
- भगवान गणेश की पूजा के बाद नवग्रह को पूजें, उसके बाद माता लक्ष्मी का आह्वान करें।
- गंगा जल, दूध, दही, देशी घी और शहद को मिलाकर पंचामृत बना लें। इससे लक्ष्मीजी की मूर्ति को स्नान करवाएं।
- अब लक्ष्मीजी की मूर्ति को पंचामृत से निकालकर गंगा जल से भरे बर्तन में रखें। फिर बाहर निकालकर साफ़ और सूखे कपड़े से पोंछ लें।
- लक्ष्मीजी की मूर्ति को पुन: उनके स्थान पर रख दें और तिलक लगाकर फूल, वस्त्र (कपड़े), श्रृंगार की सामग्री चढ़ाएं।
- अब धूप-दीप जलाएं और माता लक्ष्मी को दिखाते हुए लक्ष्मी कथा का वाचन करें।
- कथा वाचन के बाद माता लक्ष्मी के आगे भोग चढ़ाएं। उन्हें दक्षिणा भी चढ़ायें।
- पूरे श्रद्धाभाव से परिवार सहित माता लक्ष्मी की आरती गाएं।
- आरती के बाद फिर एक बार फूल चढ़ाएं और हाथ जोड़कर उनसे सदैव घर में बसे रहने की प्रार्थना करें।
- पूजा समाप्त होने के बाद पूजा घर का दरवाज़ा बंद न करें, दरवाज़ा खुला रखें।
- पूजा में कोई भूल-चूक रह सकती है। उसके लिए क्षमा याचना भी करें।

पार्षद सीपी कुमावत बने 'पब्लिक के स्टार'



'भास्कर समाचार' पर नकुल पथ, लाल कोठी स्कीम से शिव गिरि और हिडपाल सिंह ने खुले में कचरा डालने की समस्या पोस्ट की थी। कचरा डालने की जगह न होने और मना करने के बाद भी लोग यहां खुले में कचरा डालते है। इस समस्या का स्थायी समाधान करवाएं। समस्या पोस्ट होने के बाद वार्ड 83 के पार्षद सी.पी. कुमावत ने कचरे का निस्तारण करवाकर समाधान करवाया और लोगों से खुले में कचरा डालने की बजाय हूपर में कचरा डालने का आग्रह भी किया।

म्यूजिक मेस्ट्रो से दिया लता को ट्रिब्यूट, 20 कलाकारों ने 3 घंटे में गाए 25 गाने



'मेरे ख्वाबों में जो आए...' और 'दिल विल प्यार व्यार मैं क्या जानूं रे...' जैसे गानों से कलाकारों के साथ ऑडियंस ने भी लता के दौर को याद किया। मौका था महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में शनिवार को आयोजित म्यूजिकल इवनिंग 'लता विद म्यूजिक मैस्ट्रोज' का। मैलोडीज विद रश्मि ग्रुप की ओर से हुए इस प्रोग्राम में शहर के गायक कलाकारों ने बॉलीवुड के गानों से लता मंगेशकर को ट्रिब्यूट दिया। शाम की शुरुआत रश्मि बालोदिया की प्रस्तुति 'तुझ संग प्रीत लगाई सजना...' से हुई। इसके बाद मोहन कुमार बालोदिया ने 'बड़े बेवफा हैं ये हुस्न वाले...' पेश कर गीत की दर्दभरी भावनाओं को आवाज दी। इस दौरान दोनों ने फिल्म सरगम का गाना 'कोयल बोली दुनिया डोली...' पेश किया। 'मन मेरा...' की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का सभी श्रोताओं ने भरपूर आनन्द लिया।

श्री कृष्ण की गोवर्धन लीला

वृंदावन में जब सभी लोग देवराज इंद्र की पूजा की तैजयारी कर रहे थे...



तभी नन्हे कृष्णा ने नंद बाबा से एक बड़ा ही अनोखा सवाल पूछा।



कृष्णा ने सबको समझाया कि पूजा तो प्रकृति और गोवर्धन पर्वत की होनी चाहिए



कृष्णा की बात मानकर, ग्रामीणों ने गोवर्धन की पूजा की और 'अन्नकूट' का भोग लगाया



यह देखकर इंद्र देव क्रोध से लाल हो गए और उन्होंने अपनी शक्ति दिखाई



भीषण आंधी-तूफान और मूसलाधार बारिश ने पूरे वृंदावन को संकट में डाल दिया



सबकी रक्षा के लिए, नन्हें कृष्णा ने अपनी छोटी उंगली पर विशाल गोवर्धन पर्वत उठा लिया



तूफान रुका, इंद्र का अहंकार टूटा और पूरे ब्रज ने जयकार किया!



कथा का सार

भगवान श्री कृष्ण ने यह सिद्ध किया कि वास्तविक जीवनदायिनी हमारी प्रकृति, पर्वत और गौ-धन हैं। जब अहंकार वश इंद्र ने विनाशकारी वर्षा की, तब कान्हा ने सामूहिक संबल बनकर पूरे गोवर्धन को छत्र बनाकर सभी की रक्षा की।

दीपोत्सव और ज्योतिष का संगम

प्रकाश, ऊर्जा और सकारात्मक जीवन की ओर एक आध्यात्मिक यात्रा



भारत की संस्कृति में दीपावली केवल दीप जलाने और उत्सव मनाने का पर्व नहीं है, बल्कि यह प्रकाश, ऊर्जा, समृद्धि और आत्मचिंतन का पर्व है। दीपोत्सव का वास्तविक अर्थ है—अंधकार से प्रकाश की ओर, नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर और अज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ना। भारतीय परंपरा में इस पवित्र अवसर का संबंध केवल धार्मिक आस्था से ही नहीं, बल्कि ज्योतिष, वास्तु और प्रकृति की ऊर्जा से भी जोड़ा गया है।

ज्योतिष भारतीय ज्ञान परंपरा की एक महत्वपूर्ण विद्या है, जिसमें ग्रहों, नक्षत्रों और कालचक्र के माध्यम से जीवन के विभिन्न पक्षों को समझने का प्रयास किया जाता है। वहीं दीपावली का पर्व हमें यह संदेश देता है कि जीवन में बाहरी प्रकाश के साथ-साथ आंतरिक प्रकाश को भी जागृत करना आवश्यक है।

दीपक और ऊर्जा का प्रतीक : एक छोटा-सा दीपक अपने आसपास के अंधकार को दूर करने की क्षमता रखता है। भारतीय परंपरा में दीपक को ज्ञान और सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है। जब दीपावली पर घर में दीप प्रज्वलित किए जाते हैं, तो वह केवल सजावट नहीं होती, बल्कि हमारे भीतर एक सकारात्मक संकल्प भी पैदा करती है।

दीपक की लौ हमें जीवन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत सिखाती है—परिस्थितियां चाहे कितनी भी अंधकारमय क्यों न हों, एक छोटा-सा प्रकाश भी दिशा दिखा सकता है।

यही विचार ज्योतिष के दर्शन से भी जुड़ता है। ज्योतिष व्यक्ति को समय, परिस्थितियों और संभावनाओं को समझने का एक पारंपरिक माध्यम प्रदान करता है। ग्रहों की स्थिति को देखकर व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर विचार कर सकता है और अपने कर्म, निर्णय तथा व्यवहार में आवश्यक सुधार करने का प्रयास कर सकता है।

दीपावली और लक्ष्मी तत्व : दीपावली का एक प्रमुख केंद्र माता लक्ष्मी की आराधना है। लक्ष्मी केवल धन की देवी के रूप में नहीं, बल्कि समृद्धि, सौभाग्य, शांति और जीवन में संतुलन के व्यापक प्रतीक के रूप में भी देखी जाती हैं।

ज्योतिषीय दृष्टि से शुक्र ग्रह को ऐश्वर्य, सौंदर्य, भौतिक सुख-सुविधाओं और वैभव से जोड़ा जाता है। **...शेष पृष्ठ 19 पर**

TARKASHI
JEWELLERS
SINCE 1990 | JAIPUR



GOLD DIAMOND KUNDAN SILVER
10, J.DA. Shopping center, Bajaj Nagar, Jaipur
tarkashijewellers@gmail.com
Mahedra Singh
+91-9887419340
Prashant kumawat
+91-7737561581





कुमावत समाज के **श्री धीरज वर्मा** एवं **श्री कमलेश वर्मा** को Dy. SP के पद पर पदोन्नत होने पर **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एंव उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामना।

स्व. श्रीमती संतोष कुमावत की तृतीय पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें रक्तवीरों का ललित मारवाल और देवा फाउंडेशन की ओर से सम्मान किया गया

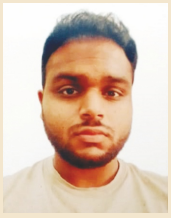




जूही कुमारी को जिला स्तरीय कराटे प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने पर बहुत बहुत बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

श्री बाबूलाल ब्याड़वाल के दो पौत्रों ने किया B.Tech.





चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय से श्री बाबूलाल ब्याड़वाल, पूर्व अध्यक्ष एवं मुख्य संरक्षक के दो पौत्रों (1) जय कुमावत पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमावत B.Tech. (Computer Science) तथा प्रियांशु कुमावत B.Tech. (Automobile Engineering) में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से **जय कुमावत** एवं **प्रियांशु कुमावत** को हार्दिक बधाई एवं शुभकामना।

उर्मिला कुमावत जिला संयोजक नियुक्त



पीसांगन सिटी। भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष मदनलाल राठौड़ के निदेर्शानुसार भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष राखी राठौड़ द्वारा सेवा संकल्प अभियान के तहत आगामी आंगन मिलन सेवा अभियान में जिला मंत्री व पूर्व प्रधान उर्मिला कुमावत को मोर्चा की जिला संयोजक नियुक्त किया। बधाई।



दीपोत्सव और ज्योतिष का संगम

प्रकाश, ऊर्जा और सकारात्मक जीवन की ओर एक आध्यात्मिक यात्रा

पृष्ठ 17 से आगे...

इसलिए दीपावली जैसे अवसर पर स्वच्छता, सुंदरता, अनुशासन और सकारात्मक वातावरण को विशेष महत्व दिया जाता है।

लेकिन समृद्धि का अर्थ केवल धन का बढ़ना नहीं है। वास्तविक समृद्धि तब है जब घर में स्वास्थ्य, प्रेम, सम्मान, संतोष, अच्छे संबंध और मानसिक शांति भी मौजूद हों। इस दृष्टि से दीपावली हमें समृद्धि की व्यापक परिभाषा समझाती है।

ज्योतिष हमें क्या संदेश देता है? : ज्योतिष को केवल भविष्य बताने की विधा के रूप में देखना इसके व्यापक सांस्कृतिक स्वरूप को सीमित कर देता है। भारतीय परंपरा में ज्योतिष का उपयोग समय और जीवन के विभिन्न पक्षों पर विचार करने के लिए भी किया गया है।

दीपावली के अवसर पर हम अपनी जन्मकुंडली, ग्रहों और जीवन की परिस्थितियों पर चिंतन करने के साथ-साथ यह भी विचार कर सकते हैं कि पिछले वर्ष हमने क्या सीखा और आने वाले समय में हमें किन क्षेत्रों में सुधार करना है।

ग्रह परिस्थितियों के संकेत दे सकते हैं, लेकिन जीवन की दिशा हमारे कर्म, निर्णय और प्रयासों से भी निर्धारित होती है।

इसलिए दीपोत्सव का संदेश केवल पूजा तक सीमित नहीं होना चाहिए। यह अपने जीवन में नई शुरुआत का अवसर भी बन सकता है।

दीपोत्सव और वास्तु : दीपावली के समय घर की सफाई और सजावट की परंपरा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वास्तु परंपरा में स्वच्छ और व्यवस्थित स्थान को सकारात्मक वातावरण से जोड़ा जाता है।

घर का अनावश्यक सामान हटाना, मुख्य द्वार को स्वच्छ रखना, प्रकाश की उचित व्यवस्था करना और पूजा स्थल को व्यवस्थित रखना—ये सभी कार्य व्यक्ति के मन में भी नई ऊर्जा और उत्साह पैदा कर सकते हैं।

वास्तु का मूल विचार स्थान और उसके उपयोग के बीच सामंजस्य स्थापित करने से जुड़ा है। जब हमारा रहने का स्थान व्यवस्थित होता है, तो हमारे दैनिक जीवन में भी अनुशासन और सकारात्मकता बढ़ सकती है।

बाहर का दीपक और भीतर का दीपक : दीपावली पर हम अपने घर में हजारों दीपक जला सकते हैं, लेकिन यदि मन में क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार और नकारात्मकता का अंधकार बना रहे, तो उत्सव अधूरा रह जाता है।

इसलिए दीपावली का सबसे बड़ा संदेश है—एक दीपक घर में जलाएं और एक दीपक अपने भीतर।

अपने भीतर ज्ञान का दीपक जलाएं।
अपने व्यवहार में प्रेम का दीपक जलाएं।
अपने संबंधों में विश्वास का दीपक जलाएं।
अपने कर्मों में ईमानदारी का दीपक जलाएं।
और अपने जीवन में आशा का दीपक हमेशा प्रज्वलित रखें।
यही दीपोत्सव का वास्तविक दर्शन है।

ज्योतिष, दीपोत्सव और आत्मचिंतन : ज्योतिष हमें समय की प्रकृति को समझने की प्रेरणा देता है, जबकि दीपोत्सव हमें उस समय का सदुपयोग करने का संदेश देता है। दोनों का संगम व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति अधिक जागरूक बनाने की दिशा में देखा जा सकता है।

यदि हम दीपावली को केवल एक दिन का त्योहार न मानकर नई सोच, नए संकल्प और सकारात्मक जीवनशैली की शुरुआत बनाएं, तो इसका महत्व कई गुना बढ़ जाता है।

इस दीपावली हम केवल अपने घर को रोशन न करें, बल्कि अपने विचारों को भी प्रकाशित करें। केवल धन की कामना न करें, बल्कि सद्बुद्धि, स्वास्थ्य, प्रेम, शांति और संतुलित जीवन की भी कामना करें।

क्योंकि अंततः जीवन की सबसे बड़ी ज्योति बाहर नहीं, मनुष्य के भीतर जलती है।

निष्कर्ष : दीपोत्सव और ज्योतिष का संगम हमें भारतीय ज्ञान परंपरा की उस सुंदर सोच से परिचित कराता है, जिसमें प्रकृति, समय, ऊर्जा, कर्म और आध्यात्मिकता को एक-दूसरे से जोड़कर देखा गया है।

दीपावली हमें अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का संदेश देती है और ज्योतिष हमें समय एवं जीवन के विभिन्न पक्षों को समझने की प्रेरणा देता है। जब इन दोनों विचारों को सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपनाया जाता है, तो दीपावली केवल एक त्योहार नहीं रहती—वह अपने जीवन को नए प्रकाश में देखने का अवसर बन जाती है।

आइए, इस दीपोत्सव पर एक संकल्प लें—

''एक दीप घर के लिए,
एक दीप समाज के लिए,
और एक दीप अपने भीतर के अंधकार को दूर करने के लिए।''

यही दीपोत्सव की सच्ची ज्योति है,
और यही ज्योतिष के साथ उसका सुंदर संगम।

2026 की दीपावली : बारह राशियों के लिए ज्योतिषीय संकेत

दीपावली केवल प्रकाश का पर्व नहीं, बल्कि नए संकल्प और नई ऊर्जा का अवसर भी है। वर्ष 2026 की दीपावली के आसपास वैदिक/निरयन गणना में गुरु कर्क राशि में, शनि मीन राशि में तथा राहु कुंभ और केतु सिंह राशि में स्थित दिखाई देते हैं। इन्हीं व्यापक ग्रहस्थितियों को आधार बनाकर बारह राशियों के लिए निम्न सामान्य संकेत देखे जा सकते हैं।

1. मेष राशि : मेष राशि के जातकों के लिए यह दीपावली नई योजनाओं और कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाली हो सकती है। पुराने रुके हुए कार्यों को व्यवस्थित करने और आर्थिक मामलों में सोच-समझकर निर्णय लेने का समय रहेगा। परिवार के साथ समय बिताना मानसिक संतुलन देगा।

संदेश : जल्दबाजी के बजाय योजना और अनुशासन को महत्व दें।

2. वृषभ राशि : वृषभ राशि के लिए दीपावली का समय धन, परिवार और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करने वाला रह सकता है। व्यापार या नौकरी में अपनी पुरानी योजनाओं को नए तरीके से लागू करने का अवसर मिल सकता है। खर्च और निवेश में संतुलन आवश्यक रहेगा।

संदेश: स्थिर कदम ही लंबे समय की समृद्धि का आधार बनते हैं।

3. मिथुन राशि : मिथुन राशि के जातकों के लिए संवाद, संपर्क और नए विचार महत्वपूर्ण रहेंगे। व्यवसाय में नए लोगों से जुड़ने या पुराने संपर्कों से लाभ मिलने की संभावना परंपरागत ज्योतिषीय दृष्टि से देखी जा सकती है।

संदेश: आपकी वाणी और आपकी योजना—दोनों आपकी शक्ति हैं।

4. कर्क राशि : कर्क राशि के लिए यह दीपावली विशेष रूप से आत्मविश्वास, परिवार और विकास की भावना लेकर आ सकती है। गुरु की कर्क राशि में स्थिति को वैदिक ज्योतिष में गुरु के लिए अनुकूल माना जाता है। ? परिवार और व्यक्तिगत विकास से जुड़े विषय प्रमुख हो सकते हैं।

संदेश: अपनी क्षमता को पहचानें और सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ें।

5. सिंह राशि : सिंह राशि वालों के लिए दीपावली आत्ममंथन और नई दिशा निर्धारित करने का अवसर हो सकती है। नेतृत्व की भूमिका में धैर्य रखना महत्वपूर्ण रहेगा। अनावश्यक अहंकार या जल्दबाजी से बचकर चलना लाभकारी रहेगा।

संदेश: सच्चा नेतृत्व दूसरों को साथ लेकर चलने में है।

6. कन्या राशि : कन्या राशि के लिए दीपावली व्यवस्था, आर्थिक योजना और कार्यक्षमता का संदेश लेकर आ सकती है। अपनी दिनचर्या और वित्तीय योजनाओं को व्यवस्थित करने से लाभ मिल सकता है। नए कार्य शुरू करने से पहले पूरी जानकारी लेना उपयोगी रहेगा।

संदेश: छोटी-छोटी सही आदतें बड़ी सफलता का आधार बनती हैं।

7. तुला राशि : तुला राशि के जातकों के लिए संबंध, साझेदारी और आर्थिक संतुलन महत्वपूर्ण विषय रहेंगे। दीपावली पुराने मतभेदों को पीछे छोड़कर रिश्तों में नई शुरुआत करने का अवसर दे सकती है।

संदेश: समृद्धि केवल धन से नहीं, अच्छे संबंधों से भी बनती है।

8. वृश्चिक राशि : वृश्चिक राशि के लिए यह समय आत्मविश्वास और परिवर्तन से जुड़ा हो सकता है। पुराने मामलों को समाप्त कर नई दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। आर्थिक मामलों में जोखिम लेने से पहले पर्याप्त विचार आवश्यक रहेगा।

संदेश: परिवर्तन से डरने के बजाय उसे समझकर स्वीकार करें।

9. धनु राशि : धनु राशि के जातकों के लिए ज्ञान, यात्रा, शिक्षा और नए अवसर महत्वपूर्ण हो सकते हैं। करियर में नई जिम्मेदारी या किसी नए विचार पर काम करने की प्रेरणा मिल सकती है।

संदेश: सीखते रहने वाला व्यक्ति हमेशा आगे बढ़ता रहता है।

10. मकर राशि : मकर राशि के लिए दीपावली मेहनत, जिम्मेदारी और दीर्घकालीन योजनाओं का समय हो सकती है। जल्द परिणाम की अपेक्षा करने के बजाय लगातार प्रयास करना अधिक महत्वपूर्ण रहेगा। परिवार और काम के बीच संतुलन बनाए रखना उपयोगी होगा।

संदेश: धैर्य के साथ किया गया कर्म स्थायी परिणाम देता है।

11. कुंभ राशि : कुंभ राशि के लिए नए विचार, तकनीक, नेटवर्क और सामाजिक संपर्क महत्वपूर्ण हो सकते हैं। दीपावली के आसपास अपनी आर्थिक और व्यावसायिक योजनाओं की समीक्षा करना उपयोगी रहेगा।

संदेश: नई सोच को सही योजना के साथ जोड़ें।

12. मीन राशि : मीन राशि के लिए यह दीपावली आत्मचिंतन, आध्यात्मिकता और भविष्य की योजना का अवसर हो सकती है। काम के साथ मानसिक शांति और पारिवारिक संबंधों को भी महत्व देना आवश्यक रहेगा।

संदेश: बाहरी सफलता के साथ भीतर की शांति भी जीवन की समृद्धि है।

- निकिता वर्मा

गोवर्धन पूजा: प्रकृति, विश्वास और मनुष्य के अहंकार की कथा....



दीपावली की रौनक अभी घरों और बाजारों में बनी ही रहती है कि भारतीय संस्कृति का एक और पर्व दस्तक देता है—**गोवर्धन पूजा**। कहीं आँगन में गोबर से गोवर्धन पर्वत की आकृति बनाई जाती है, कहीं फूलों से सजावट होती है, कहीं अन्नकूट का भोग तैयार होता है, तो कहीं परिवार के लोग मिलकर पूजा की तैयारियों में जुटे दिखाई देते हैं। घरों में पकवानों की सुगंध और मंदिरों में भजनों की ध्वनि के बीच यह पर्व हमें उस परंपरा से जोड़ता है, जिसमें प्रकृति को केवल उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन के आधार के रूप में देखा गया है।



गोवर्धन पूजा का संबंध भगवान श्रीकृष्ण की उस लीला से है, जिसका वर्णन श्रीमद्भागवत महापुराण में मिलता है। कथा के अनुसार, गोकुल के लोग वर्षा के देवता इंद्र की पूजा किया करते थे, क्योंकि उनकी आजीविका खेती, पशुपालन और वर्षा पर निर्भर थी। बालक कृष्ण ने उनसे प्रश्न किया कि उनके जीवन का वास्तविक आधार क्या है—केवल देवताओं को प्रसन्न करने की परंपरा या वह प्रकृति, जो उन्हें घास, जल, अन्न और पशुओं के लिए चारा देती है? कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का विचार रखा। गोकुलवासियों ने उनकी बात मानी और गोवर्धन की पूजा की।

इंद्र को यह अपना अपमान लगा। क्रोधित होकर उन्होंने गोकुल में मूसलाधार वर्षा कर दी। तब कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा उँगली पर उठाकर गोकुलवासियों और उनके पशुओं को आश्रय दिया। सात दिनों तक सभी उस पर्वत के नीचे सुरक्षित रहे। अंततः इंद्र को अपनी भूल का बोध हुआ और उनका अहंकार शांत हुआ। यह कथा केवल एक चमत्कार का वर्णन नहीं करती; इसके भीतर अहंकार, सामूहिक विश्वास और प्रकृति के प्रति मनुष्य के संबंध पर विचार करने का अवसर भी छिपा है।

कृष्ण और इंद्र की इस कथा में एक प्रश्न आज भी प्रासंगिक है—शक्ति बड़ी है या उस शक्ति का विवेकपूर्ण उपयोग? इंद्र के पास वर्षा की शक्ति थी, लेकिन क्रोध ने उन्हें विनाश की ओर धकेल दिया। कृष्ण ने अपनी शक्ति का उपयोग दूसरों को बचाने के लिए किया। यही अंतर केवल देवताओं की कथा तक सीमित नहीं है। **मनुष्य के जीवन में भी पद, धन, ज्ञान और अधिकार तभी सार्थक हैं, जब उनका उपयोग दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने में** हो। शक्ति का अर्थ दूसरों को अपने सामने झुकाना नहीं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर उनके लिए सहारा बनना है।

गोवर्धन पूजा का एक दूसरा महत्त्व भी है, जिसे समझना आज के समय में विशेष रूप से आवश्यक है। हमारा जीवन प्रकृति पर निर्भर है, लेकिन आधुनिक जीवनशैली में हम अक्सर इस निर्भरता को भूल जाते हैं। जिस मिट्टी से अन्न उगता है, जिस पानी से जीवन चलता है और जिन पशुओं के श्रम ने सदियों तक ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सहारा दिया, उनके प्रति कृतज्ञता केवल त्योहार के एक दिन तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। **गोवर्धन की कथा हमें याद दिलाती है कि प्रकृति के साथ संबंध केवल लेने का नहीं, संरक्षण और सम्मान का भी है।**

इसी परंपरा का एक सुंदर रूप **अन्नकूट में** दिखाई देता है। अनेक मंदिरों और घरों में तरह-तरह के व्यंजन बनाकर भगवान को अर्पित किए जाते हैं। **अन्नकूट का अर्थ ही है अनेक प्रकार के अन्न और पकवानों का समूह। इस परंपरा में समृद्धि का उत्सव तो है ही, भोजन के प्रति सम्मान और सामूहिक सहभागिता का भाव भी है।** जब भोजन भोग के रूप में अर्पित होता है और फिर लोगों में बाँटा जाता है, तो वह हमें याद दिलाता है कि अन्न केवल थाली तक पहुँचने वाली वस्तु नहीं है; उसके पीछे धरती, पानी, किसान, पशु और अनेक लोगों का श्रम जुड़ा होता है।

आज गोवर्धन पूजा मनाते समय शायद हमें केवल पर्वत की आकृति बनाकर पूजा करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए। यह भी सोचना चाहिए कि हम अपने आसपास की प्रकृति के लिए क्या कर रहे हैं, अपने संसाधनों का कितना जिम्मेदारी से उपयोग करते हैं और अपने सामर्थ्य का इस्तेमाल दूसरों की सहायता के लिए कितना करते हैं। कृष्ण की कथा में गोवर्धन पर्वत के नीचे केवल मनुष्य ही नहीं, पशु भी आश्रय पाते हैं। इस दृश्य में संरक्षण का एक व्यापक भाव दिखाई देता है—संकट के समय सहारा ऐसा हो, जिसमें जीवन के हर रूप के लिए जगह हो।

दीपावली हमें प्रकाश और आशा का स्मरण कराती है, तो गोवर्धन पूजा हमें उस धरती के प्रति कृतज्ञ होना सिखाती है, जिस पर हमारा जीवन टिका है। शायद इन दोनों पर्वों के बीच यही गहरा संबंध है—प्रकाश तभी सार्थक है, जब वह हमारे विचारों को भी उजाला दे; और पूजा तभी सार्थक है, जब वह हमारे व्यवहार में भी दिखाई दे।

गोवर्धन पूजा का वास्तविक संदेश शायद यही है कि प्रकृति का सम्मान कीजिए, अहंकार से बचिए और अपने सामर्थ्य को दूसरों के लिए सहारा बनाइए। पर्वत उठाने की कथा अपनी जगह है, लेकिन जीवन में किसी गिरते हुए व्यक्ति को संभाल लेना भी अपने आप में एक बड़ी लीला है।

- सीमा मारवाल

आंवला एक गुण अनेक

सेहत से लेकर ब्यूटी तक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है **आंवला**। आंवला को अमृत फल कहा गया है, यह अनेक गुणों का ख़ज़ाना है। इसमें विटामिन सी, आयरन, कैल्शियम, फाइबर, पोटैशियम, कार्बोहाइड्रेट भरपूर होते है। आंवला ब्लड शुगर व कोलेस्ट्रॉल लेवल को नियंत्रित करता है। कब्ज़, एसिडिटी, गैस जैसी पेट की समस्याओं में यह रामबाण है। आंवला बॉडी को डिटॉक्स करने के साथ ही हार्ट अटैक के ख़तरे को भी कम करता है।



घरेलू टिप्स

- सुपर फूड आंवला खाने से जोड़ों के दर्द, आर्थराइटिस व ऑस्टियोपोराइसिस में आराम मिलता है।
- सर्दी-खांसी से बचाव के लिए आंवले के टुकड़े करके उस पर काला नमक या नमक छिड़ककर सुबह-सुबह खाली पेट सेवन करें। इसे गुड़ के साथ भी खा सकते हैं।
- यदि बच्चों को सर्दी-जुकाम है तो उन्हें आंवले का पानी पिलाएं, इससे उन्हें जल्दी ही आराम होगा।
- प्रात:काल खाली पेट आंवला खाने से ब्लड शुगर कंट्रोल में रहता है।
- घने-काले बाल और हेल्दी हेयर के लिए आंवले को पीसकर इसके रस को बालों की जड़ों में लगाएं। घंटेभर बाद धो लें।
- सर्दियों में आंवले का मुरब्बा सेहत के लिए बेहद फ़ायदेमंद है, खासकर बच्चों व बुजुर्गों के लिए, यह शरीर को गर्म रखने के साथ-साथ हड्डियों को भी मज़बूत बनाता है।
- यदि श्वसन संबंधी समस्या है तो दो-तीन आंवले को पानी में उबालकर सुबह एक ग्लास पीएं।
- फेफड़े के सूजन में ताजे आंवले को पीस ले। उसमें हल्दी मिलाकर एक टीस्पून शहद के साथ सुबह खाली पेट लें।
- गले की खराश दूर करने के लिए ताज़े आंवले का रस निकालकर शहद के साथ लें।
- ब्लड सर्कुलेशन को दुरुस्त रखने के लिए आंवले के पाउडर में नारियल का तेल मिलाकर पकाएं। जब तेल अच्छी तरह से पक जाए, तब इसे ठंडा करके छानकर बॉटल में भर लें। इस आंवले के तेल को हल्का गर्म करके बालों में लगाएं। घंटे भर बाद बाल धो लें।
- लिवर को हेल्दी रखने के लिए ताज़े आंवले का जूस शहद मिलाकर नाश्ते में लें।
- फेफड़े को क्लीन करने व अस्थमा जैसी समस्या में आंवला पाउडर को शहद या फिर गुनगुने पानी के साथ नियमित रूप से सुबह लें। चाहें तो इसमें दही भी मिलाकर सेवन कर सकते हैं।
- चेहरे को क्लीन रखने और दिनभर तरोताज़गी के लिए एक टीस्पून आंवला पाउडर को पानी, शहद या दूध में मिक्स करके लें।। इसके अलावा इसे, दही, में मिलाकर चेहरे पर लगाने से फेस ग्लो करता है।
- हेल्थ व टेस्ट दोनों का काम करती है आंवला की चटनी। दो-चार आंवले को धो लेवें। इसमें दो कली लहसुन, जीरा, हरी मिर्च व नमक मिलाकर पीस लें। भोजन के साथ इस चटनी का स्वाद लें।

नोट : यदि आपके कोई बीमारी हो तो आंवले के सेवन से पहले चिकित्सक से परामर्श करना उचित है।

आई दिवाली

आई देखो महादिवाली
लाई संग अनन्त खुशिहाली
सतरंगी दीयों की बहार है आई
सँग अपने खुशियाँ अपार है लाई।
बिखेर चहुँओर रंग हो रंग है,
आए अवध में राम सिया संग है।
तो मंगल गाओ, दीप जलाओ,
खुशी मनाओ, नाचो गाओ।
एक तन था पर प्राण नहीं थे
गीत तो थे पर गान नहीं थे।
कहने को तो सब कुछ था पर
राम के धाम में राम नहीं थे।
बरसों से वीरान खड़ी थी
अयोध्या निष्प्राण पड़ी थी।
राम राह में बाट निहारे
अवधपुरी की गली-गली थी।
ये वनवास तो बहुत बड़ा था
500 साल तक भारत लड़ा था।
तब सपना साकार हुआ है,
राम राज का आगाज हुआ है।
कहती थी शबरी भी आएंगे राम
कभी तो मेरे बेर प्रेम से खाएंगे राम।
लो आ गये राम .... लो आ गये राम
तो मंगल गाओ, दीप जलाओं
खुशी मनाओ, नाचो गाओ।

- उर्वशी बालोदिया

भैया दूजः भाई-बहन के अटूट प्रेम और स्नेह का पावन पर्व

भैया दूज (भाई दूज) हिंदू धर्म के प्रमुख और पवित्र त्योहारों में से एक है। यह त्योहार भाई और बहन के बीच के पवित्र रिश्ते, अटूट प्रेम, और आपसी विश्वास का प्रतीक है। हर वर्ष यह पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। इसे 'यम द्वितीया' के नाम से भी जाना जाता है। दिवाली के ठीक दो दिन बाद आने वाला यह त्योहार भाई-बहन के जीवन में खुशियों और मिठास की नई बहार लेकर आता है।

भैया दूज की पौराणिक कथा : पौराणिक कथाओं के अनुसार, इस दिन मृत्यु के देवता 'यमराज' अपनी बहन 'यमी' (यमुना नदी) के घर गए थे। यमुना ने अपने भाई का बड़े आदर-सतकार के साथ स्वागत किया, उनके माथे पर तिलक लगाया और उन्हें स्वादिष्ट भोजन कराया। बहन के इस निस्वार्थ प्रेम और आदर से प्रसन्न होकर यमराज ने वरदान दिया कि जो भी भाई इस दिन अपनी बहन के घर जाएगा, उसकी बहन के हाथों से भोजन ग्रहण करेगा और तिलक लगवाएगा, उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहेगा। तभी से भाई दूज मनाने की परंपरा चली आ रही है।

पूजन विधि और परंपरा : भाई दूज के दिन बहनें सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि करके पूजा की थाली सजाती हैं। इस थाली में रोली, अक्षत (चावल), कलावा (रक्षासूत्र), सूखा नारियल (गोला), मिठाई और फल रखे जाते हैं।

- **तिलक और आरतीः** बहनें अपने भाई को शुभ दिशा में बिठाकर उनके माथे पर रोली और अक्षत का तिलक लगाती हैं और उनकी कलाई पर कलावा बांधती हैं। इसके बाद वे भाई की लंबी उम्र, सुख-समृद्धि और अच्छे स्वास्थ्य की प्रार्थना करती हैं।

पूजन के दौरान इस मंत्र का उच्चारण करें-

गंगा पूजे यमना को, यमी पूजे यमराज को।
सुभद्रा पूजे कृष्ण, गंगा-यमना नीर बहे।
मेरे भाई आप बढ़े फले-फूले।

- **उपहार और आशीर्वादः** तिलक के बाद बहनें अपने भाई को मिठाई और सूखा नारियल भेंट करती हैं। भाई भी अपनी बहन के प्रति अपना प्रेम और सम्मान व्यक्त करने के लिए उन्हें उपहार या धन (उपहार राशि) देते हैं और जीवनभर उनकी रक्षा करने का वचन देते हैं।

पर्व का महत्व : आज के दौर में जब हर कोई अपनी व्यस्त दिनचर्या में उलझा हुआ है, ऐसे में भाई दूज जैसे त्योहार रिश्तों की अहमियत को बनाए रखने में मदद करते हैं। यह पर्व न केवल दूरी मिटाने का जरिया है, बल्कि यह परिवार को एक सूत्र में बांधने का काम भी करता है। यह दिन भाई-बहन को उनके बचपन की खट्टी-मीठी यादों को ताजा करने का अवसर देता है।

संक्षेप में कहा जाए तो, भैया दूज केवल एक परंपरा या धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह निस्वार्थ प्रेम, समर्पण और सुरक्षा के वादे का पर्व है जो भाई-बहन के रिश्ते को और भी अधिक मजबूत बनाता है। **- रमेश गैदर**

चार युगों में मानव का चरित्र

मानव चरित्र को मापने का पैमाना मानव द्वारा धारित ईमानदारी - सच्चाई, दयालुता- करुणा, आत्म अनुशासन- धैर्य एवं कृतज्ञता आदि है ।

सनातन संस्कृति में युग परिवर्तन के साथ सच्चाई की परिभाषा बदलती रही है ।

सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलयुग में चरित्र (Character) और सत्य (Truth) दोनों की परिभाषा और उनके व्यावहारिक स्तर में बहुत बड़ा बदलाव आया है।

जैसे-जैसे समय आगे बढ़ा, समाज में धार्मिक चेतना और नैतिक मूल्यों का ह्रास (गिरावट) हुआ। इस बदलाव को समझने के लिए धर्मशास्त्रों में धर्म के चार पैरों (सत्य, तप, पवित्रता और दान) का उदाहरण दिया जाता है।

सतयुग (सत्ययुग) — पूर्णता और आत्मा का युग

इस युग में चरित्र का अर्थ पूर्ण आत्म-नियंत्रण और निष्काम भाव था। मनुष्य का मन, वचन और कर्म पूरी तरह एक समान होते थे। समाज में कोई छल, ईर्ष्या या कपट नहीं था।

त्रेतायुग — मर्यादा और कर्तव्यों का युग

इस युग में चरित्र की परिभाषा मर्यादा, नियमों का पालन और कर्तव्यनिष्ठा बन गई। भगवान श्री राम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा गया क्योंकि उन्होंने विकट परिस्थितियों में भी अपने नैतिक चरित्र और कुल की मर्यादा को नहीं छोड़ा ।

द्वापरयुग — अधिकार और कूटनीति का युग

इस युग में चरित्र की परिभाषा परिस्थिति के अनुसार धर्म की रक्षा करना बन गई। यहाँ सीधे-साधे चरित्र के बजाय 'विवेक' और 'न्याय' को ज्यादा महत्व दिया गया। श्री कृष्ण ने धर्म (न्याय) की स्थापना के लिए कूटनीति का सहारा लिया, क्योंकि सामने खड़े शत्रु (कौरव) पूरी तरह अनैतिक थे।

कलयुग — स्वार्थ और संघर्ष का युग

वर्तमान युग में चरित्र की परिभाषा बहुत संकुचित हो गई है। आज दूसरों को नुकसान न पहुँचाना और अपनी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाना ही बहुत बड़ा चरित्र माना जाता है। वासना, धन और लोभ के कारण व्यक्ति का आंतरिक चरित्र सबसे निचले स्तर पर है। **-एस आर सिंघाटिया**

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर (स्व.)
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोड़िया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, पांचावाला, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर, झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल, टोंक फाटक, जयपुर
वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर

विशिष्ठ संरक्षक

वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मॅडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धुंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाल, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, ढोडसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर, जयपुर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
वि/144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
वि/145 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
वि/146 श्री यतेन्द्र सिंह, खिरणी फाटक, जयपुर
वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, रांकड़ी, जयपुर
वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/150 श्री कैलाश घोड़ावड़, सूरत
वि/151 श्री गणेश लाल कुमावत, देवी नगर, जयपुर
वि/152 श्री ओम प्रकाश वर्मा, अलथान रोड, सूरत
वि/153 डॉ. अनूप कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/154 श्री महेश जोहरी, लालकोठी, जयपुर
वि/155 श्री सोभाग्य चंद्र कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/156 डॉ. डी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/157 श्री वीरेन्द्र सिंह तारकशी, लक्ष्मी आभूषण मंदिर, जयपुर

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

24 सितम्बर श्री रामचन्द्र बातरा, हिरण मगरी, उदयपुर
25 सितम्बर श्री दुर्गा प्रसाद खोराणिया, झोटवाड़ा, जयपुर
27 सितम्बर श्रीमती राधा देवी पत्नी श्री पृथ्वीराज वर्मा (कैक्ट्या), जयपुर
27 सितम्बर श्रीमती सोहनी बाई टांक पत्नी स्व. श्री गणेश, सकरावास
28 सितम्बर श्रीमती धापू देवी पत्नी श्री बाबूलाल मारवाल, मानसिंहपुरा, टोंक रोड, जयपुर
2 अक्टूबर डॉ. आर.सी. कुमावत श्री केशालाल देवतवाल झोटवाड़ा, जयपुर
3 अक्टूबर श्री रामलाल तुनवाल, जयपुर
5 अक्टूबर श्रीमती संतोष कुमारी पत्नी श्री रामगोपाल मारवाल, चौमूं
6 अक्टूबर श्री अमित कुमावत (खोराणिया), बोराज, जिला जयपुर
6 अक्टूबर श्री विष्णु प्रकाश पुत्र स्व. श्री नारायण मारवाल, ब्यावर
7 अक्टूबर श्रीमती शकुन्तला देवी पत्नी श्री ओम प्रकाश धुंधारिया, नींदड़
7 अक्टूबर श्री शेखर कुमावत (होदकास्या), विनाबोबस्ती, बरकतनगर, जयपुर
8 अक्टूबर श्री गरधारीलाल धुंधारिया पुत्र स्व. श्री विजयलाल, नींदड
9 अक्टूबर श्री मोहन लाल झालवार पुत्र स्व. श्री रामसुख, भुवाणा, उदयपुर
10 अक्टूबर श्री बाबूलाल पुत्र स्व. श्री हरसहाय बारावाल, चौमूं
11 अक्टूबर श्रीमती मंगली देवी पत्नी श्री बलदेवराम नेमीवाल, दांतारामगढ़
12 अक्टूबर श्री हर्षित कुमावत पुत्र स्व. श्री रामानंद जलांधरा, झोटवाड़ा, जयपुर
12 अक्टूबर श्रीमती रामेश्वरी देवी पत्नी स्व. श्री चौथमल छापोला, हाज्यावाला, सांगानेर, जयपुर
15 अक्टूबर श्रीमती अंजू देवी पत्नी श्रीराजेन्द्र कुमार खोवाल, सांगानेर
17 अक्टूबर श्री आदित्य कुमार पुत्र श्री दीपक कुमार मारवाल
17 अक्टूबर श्रीमती यशोदा बाई पत्नी स्व. श्री गोविंदराम बबेरीवाल, उदयपुर
18 अक्टूबर श्रीमती धन्नी देवी पत्नी स्व. श्री मूलचंद कुदाल, जयपुर
19 अक्टूबर श्री चौखाराम मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नंबर	
प्रशांत	MCA	ICICI Bank	18.5.94	5'11''	नराणिया	किरोड़ीवाल	कुदीवाल	कुसुम्बीवाल	9314626840	जयपुर
तेजपाल	M.Tech.	School Director	10.3.97	5'8''	मारवाल	धुंधारिया	आईथान	जलिनद्रा	9784912016	जयपुर
तरुण	B.Tech. (CS)	Analyst	2.6.93	5'6''	खाटूवाल	खोवाल	बधानिया	केकटिया	9079125552	जयपुर
डॉ. मनन	MBBS	Preparing for PG	5.11.96	5'11''	मारवाल	उदयवाल	गुरिया	जलान्दरा	9214057429	जयपुर
सचिन	B.Sc. Nursing	CHO (Govt. Raj.)	19.2.92	5'9''	दम्बीवाल	मारवाल	आसीवाल	धमुनिया	9929125888	जयपुर
अभिषेक	B.A.	Business	13.12.97	5'9''	मारवाल	तोंदवाल	दौराया	होदकास्या	9509153616	जयपुर
संजय	M.A., ITI (Civil)	Business	20.12.97	5'5''	तोंदवाल	बारावाल	कारगवाल	मामोड़िया	7976199232	जयपुर
दीपेन्द्र (तलाकशुदा)	B.Tech. (CS)	Private Job	8.2.91	5'8''	ईसारा	टांक	सारड़ीवाल	अजमेरा	9413467771	उदयपुर
राहुल	B.A., CSE	Hospital (I.T.)	16.10.94	5'4''	गैदर	कुदीवाल	मारवाल	देवतवाल	9887689010	जयपुर
रमेश	Dipl. Aush Nursing	Pvt. Hospital	18.1.99	6'0''	घोड़ेला	नीमीवाल	मारोठिया	बेडवाल	6376033224	जयपुरा
पूरण	M.Com.	Accounts	17.1.98	5'8''	कारगवाल	वरमुंडा	घोड़ेला	सिरस्वा	8112272455	सीकर
रमेश(तलाकशुदा)	M.Com.	A.C. Mantinance Shop	10.10.94	5'10''	धुंधारिया	राजोरिया	देवतवाल	आईथान	9928366912	जयपुर
श्रवण	B.A., ITI	Railway compition	10.2.96	5'8'	बारावाल	ब्याडवाल	मारवाल	किरोडीवाल	9166341084	चौमूं
पुनीत(मांगलिक)	B.Sc, D. Pharma	Business	27.9.2000	5'9''	सिरोहिया	भौरोदिया	सरथला	कारगवाल	9887261039	जयपुरूं
कपिल	MCA	Pvt. Ltd.	18.11.97	5'11''	मारोठिया	घोड़ेला	लोरवाड़िया	तूंदवाल	9529265544	जयपुर
मनोज	M.B.A.	Paint & Hardware Shop	7.12.2001	5'9''	पिलोदिया	मुण्डानिया	टॉक	निम्बीवाल	9982616543	अजमेर
डॉ. गोविन्द	MBBS	Mhatma Gandhi Hospital	16.12.96	5'11''	जहाजपुरिया	बंशीवाल	जालवाल	तूंदवाल	9414044456	जयपुर
जितेन्द्र	B.Com, LLB	Pvt. Ltd.	22.1.93	5'4''	अजमेरा	दौराया	मोरवाल	जलान्दरा	9828173019	जयपुर
भानुप्रताप	B.A, BP Ed.	Pvt. School	12.12.97	5'8''	बबेरीवाल	सिरोहिया	बड़ीवाल	मारवाल	9001143555	जयपुर
अक्षत	B.Com.	Govt. Job	19.4.95	5'5''	गैदर	सिरसवा	धुंधारिया	जलांधरा	9001906205	जयपुर

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नंबर	
कोमल	Nursing	AIIMS	12.3.2000	5'5''	बबेरवाल	भोडिया	किरोड़ीवाल	धीजपुरिया	9829144267	जयपुर
हीतू	M.Com. (Econo.)	Cordinator	3.2.96	5'4''	मारवाल	कुदाल	खटोड़	घोड़ेला	9636046300	जयपुर
पूजा	M.Tech (IIT)	Ph.D. Final year IIT	25.3.94	5'8''	आसीवाल	छापोला	आईथान	भूरोदिया	9828438388	जयपुर
कविता	B.A., CA	Manager CBI	27.3.95	5'3''	मामोडिया	सोकिल	मारवाल	सारड़ीवाल	9414719348	जयपुर
साक्षी	MA (Eco.)	Steno. (Income Tex)	12.9.2000	5'4''	धमुनिया	सिरसवा	घोड़ेला	मारवाल	9680194333	जयपुर
पूनम	M.Sc., B.Ed.	--	8.10.95	5'4''	भोरोदिया	किरोड़ीवाल	राजोरिया	धमुणिया	6375237227	जयपुर
निशा	M.Sc. (Ch.)RKCL	Prepration compition	16.9.99	5'0''	मारोठिया	आसिवाल	बरमुंडा	मारवाल	9829720473	नीम का थाना
मुस्कान	MBA (IIM)	Manager	12.5.99	5'3''	नागा	आसीवाल	दोराया	नराणिया	9460000662	जयपुर
चित्रा	B.Sc.,B.Ed.	Teaching	13.7.98	5'3''	माचीवाल	धुंधारिया	सिरस्वा	तूंदवाल	9414823860	कुचामनसिटी
शीतल	B.Sc., B.Ed.	Preparing for comp.Exm.	3.10.98	5'2''	धमेरिया	माचीवाल	खूंखवाल	दोराया	7665735111	कोटा
ऊषा	M.Sc.	--	1.7.97	5'4''	सिरस्वा	जलान्दरा	मारोठिया	सारड़ीवाल	9828566106	-
शारदा	MA. GNM	Nursing off. Govt. Hos.	1994	--	कुंडलवाल	दम्बीवाल	होदकास्या Not Bound	बरबून्डी Not Bound	9001956606	जयपुर
निकिता	B.Sc.	Dupty Manager HDFC	20.12.96	5'4''	खोरानिया	सिराहिया	मनेठिया	कारगवाल	9929871254	जयपुर
सुमिती	M.A.	Pussing SSC/RAS	24.12.97	--	बेरा	तूंदवाल	डाबी	कुसुम्बीवाल	9460040918	कपासन
कोमल(तलाकशुदा)	10th.	--	10.5.83	5'4''	घोड़ेला	भोड़ीवाल	धुनारिया	जेठीवाल	7014926453	सीकर
आरती	B.Com. Com. Dip	--	15.6.2002	5'1''	कारमुवाल	वरमुडा	घोड़ेला	सिरस्वा	8112272455	सीकर
मानशी	M.A.	--	5.7.98	5'7''	खोवाल	धमुनिया	आसीवाल	मारोठिया	8769029204	श्रीमाधोपुर
वापिका	MCA	Pvt. Job.	25.6.92	5'0''	मारवाल	जलान्दरा	जेठीवाल	बोड़िया	9351708090	जयपुर
दिव्या	B.Tech. (CS)	--	29.6.91	5'3''	भौरोदिया	छाबल्या	खूखवाल	खटवाल	8947992776	जयपुर

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिले तो क्या करें

'कुमावत इंडिया' पत्रिका प्रति माह 25 तारीख तक सदस्यों को डाक से भेजी जाती है। यदि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका माह के अंत तक आपको नहीं मिले तो कृपया अपने क्षेत्र के पोस्टमैन अथवा पोस्ट मास्टर से इसकी शिकायत करें तथा हमें सूचित करें जिससे आपको सम्बन्धित अंक की प्रति पुन: भेजी जा सके। यदि शिकायत पर कोई कार्यवाही न हो तो कृपया इसकी सूचना 'कुमावत इंडिया' पत्रिका कार्यालय को दें या व्हाट्सएप नं. 9414554322 पर अपना नाम, पता मय पिनकोड लिखकर मैसेज करें। जिससे पत्रिका स्तर से भी सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस को शिकायत भेजी जा सके।

सूचना

आदरणीय समाजजनों से निवेदन है कि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशन हेतु सामाजिक गतिविधियों के समाचार, समाज प्रतिभाओं का विवरण व लेख आदि की जानकारी पत्रिका कार्यालय या व्हाट्सएप नं. 9414554322 या e-mailÑkumawatindiapatrika@gmail.com पर भिजवाने का कष्ट करें। सम्पादक मण्डल इन पर विचार करके इन्हें प्रकाशित कराने की कार्यवाही करेगा। आपसे निवेदन है कि प्रकाशनार्थ सामग्री मूल हो तथा पूर्व में कहीं प्रकाशित नहीं हुई हो।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सदस्यता समाप्ति सूचना

सदस्यता संख्या 5/1 से 5/92 तक के पांच वर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में नि:शुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
13. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
14. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
15. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

मिनी दाल पकवान

मिनी दाल पकवान बहुत ही स्वादिष्ट होते हैं तथा यदाकदा बनाकर खाए जाने के लिए यह श्रेष्ठ हैं। इनको बनाने की विधि निम्नानुसार है–

सामग्री : पूरी बनाने के लिए: 1 कप मैदा, आधा टीस्पून अजवायन, चुटकीभर नमक, 1 टेबलस्पून घी, 1/4 कप दूध, पानी आवश्यकतानुसार, तलने के लिए तेल।

दाल बनाने के लिए: 1 कप चना दाल, चुटकीभर हल्दी पाउडर, नमक और नींबू का रस स्वादानुसार, 1 टेबलस्पून घी, आधा-आधा टीस्पून जीरा, लाल मिर्च पाउडर और गरम मसाला पाउडर, 2-3 हरी मिर्च, 5 कलियां लहसुन की, आधा प्याज़ (कटा हुआ)।

अन्य सामग्री: मीठी चटनी, हरी चटनी, आधा प्याज़, नमक और चाट मसाला स्वादानुसार, हरा धनिया (कटा हुआ), बारीक़ सेव।



विधि: पूरी बनाने के लिए : तलने के लिए तेल को छोड़कर सारी सामग्री को मिलाकर कड़क आटा गूंध लें। छोटी-छोटी लोई लेकर बेलें। कांटे से गोद लें। गरम तेल में क्रिस्पी होने तक तल लें।

दाल बनाने के लिए: प्रेशर कुकर में चना दाल, हल्दी पाउडर, नमक और 3/4 कप पानी डालकर 2 सीटी आने तक पका लें। ध्यान रहे, दाल को नरम होने तक पकाएं, गलाना नहीं है। पैन में घी गरम करके जीरा, लहसुन, प्याज़ और हरी मिर्च डालकर भून लें। सारे पाउडर मसाले, नमक, पकी हुई चना दाल और नींबू का रस डालकर 2 मिनट तक पकाएं। आंच बंद कर दें।

सर्विंग : प्लेट में पूरी को रखें. पकी हुई दाल, मीठी चटनी और हरी चटनी डालें। नमक, चाट मसाला, हरा धनिया और बारीक़ सेव बुरककर सर्व करें।



LAM



लक्ष्मी आभूषण मन्दिर

सोने, चाँदी, कुन्दन एवं डायमण्ड
के आभूषणों के निर्माता एवं विक्रेता

विरेन्द्र सिंह 9829079497
सुरेन्द्र सिंह 9829051351
रनवीर सिंह 6360199010

0141 - 2705511
0141 - 4019497
SB-107, यूनिवर्सिटी मार्ग,
बापू नगर, जयपुर


भारतीय जनता पार्टी ओबीसी मोर्चा के
प्रदेश उपाध्यक्ष
श्री चेतन जी कुमावत
को जन्म दिवस (01 नवंम्बर) की
हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाऐं
टीम चेतन धुंधारिया

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

Since 1976



Speciality :

1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

Showroom :
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com

Website : www.sandalwood.cn.com

सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा (रजि.)



द्वारा

कुमावत समाज बन्धुओं से अपील

दीपावली के पावन पर्व पर सभी समाजबन्धुओं को हार्दिक शुभकामनाए!

भारत सरकार द्वारा जनवरी, फरवरी 2027 में जातिय जनगणना करवाई जा रही है। इस जनगणना में जनगणना करने वाले राज्य सरकार के कर्मचारी द्वारा आपको जाति के संबंध में पूछा जायेगा। आपको अपनी जाति कुमावत बतानी है। अपने गोत्र एवं प्रचलित उपनाम बता दिया तो उसकी अलग जाति बन जायेगी तथा आपको कुमावत जाति की सूची में शामिल नहीं किया जायेगा। कुमावत जाति का अर्थ उन सभी समाज बन्धुओं से है जो कुमावत क्षत्रिय, कुमावत, चेजारा, खेतेड कुम्हार, राजकुमार, नायक, वर्मा आदि जो अलग-अलग स्थानों पर अलग नाम से जाने जाते है, लेकिन जिनका आराध्य देव भगवान राम है। रामनवमी को जातिय दिवस के रूप में मनाते है जिनका प्रमुख कार्य, भवन निर्माण, कृषि, शिल्प कला है तथा सामाजिक रीति रिवाज आपस में मिलते हैं। वे सब कुमावत जाति से हैं। उन सभी से अपील है कि जातिय जनगणना में अपनी जाति में कुमावत बताये जिससे जातिय संख्या बढ़ सके व सरकारी योजनाओं का लाभ समाज को मिल सके।

विनित

रामेश्वर बम्बोरिया राष्ट्रीय अध्यक्ष, विमल कुमावत राष्ट्रीय मुख्य सलाहकार, सुरेन्द्र नागा राष्ट्रीय मुख्य संरक्षक, जयनारायण जूनवाल राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष, रूपसिंह कारगवाल राष्ट्रीय महामंत्री, नरेन्द्र रामलाल कुंडलवाल राष्ट्रीय महामंत्री, सोनिया डाल राष्ट्रीय महामंत्री, लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, डॉ. मेघना कुमावत राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, घनश्याम होदकास्या राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, नारायण प्रसाद चेजारा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, प्रदेश पदाधिकारी, सक्रिय आजीवन सदस्य तथा साधारण आजीवन सदस्य।

सम्पर्क : 8279113101, 9928193094, 9928700700, 9314502407, 9660340356

SP CONSTRUCTION

Building INDIA'S Construction









SHASHI PAL KUMAWAT



B-34, Devi Chiranjivi Colony, Surya Nagar, Gopal Pura Bye Pass, Jaipur 302015

Web: spconst.co.in E-Mail: info@spconst.co.in





Vijay Anand
International Academy

**Vill. AkedaChoud, Via-Jahota. Tah. Rampura Dabri,
Distt. Jaipur (Raj) - 303701 Call 9460852525**

Special Features

1. 100% Result
2. Centrally Air Cooled School
3. Vehicle Facility
4. Smart Classrooms
5. Highly Educated Teachers
6. International Level Syllabus
7. Worldwide Education Approaches at Home
8. Computer Coding and Programming
9. Separate Labs for Primary, Middle and Higher Classes

Nursery to X
(English Medium)

Your child deserve the Best Education

CCTV SURVEILLANCE 24X7



Director
Deendayal Kumawat



Co-ordinator
Monika Kumawat
(M.Com., B.Ed.)



Principal
Anita Chejara
(M.A., B.Ed.)

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018